सेवा में,

सचिव
संगीत नाटक अकादमी
रवीन्द्र भवन, फिरोजशाह रोड़
नई दिल्ली – 110001

आई0 सी0 एच0 योजनान्तर्गत अनुदान की किश्त के भुगतान हेतु आवेदन पत्र।

महोदया,

निवेदन करना है कि समूहन कला संस्थान (पता – एफ 6 के सामने, रैदोपुर कॉलोनी, आज़मगढ़– 276001 उ0 प्र0) को आई0 सी0 एच0 योजनान्तर्गत अनुदान प्राप्त है, जिसका संदर्भ संख्या 28-6/ICH Scheme/108/2015-16/11368 Dt. 29-01-2016 है।

इस संदर्भ में परियोजना की रिर्पोट पूर्व में भी भेजी जा चुकी है और पुनः संलग्न है –

- धोबिया नृत्य के विषय में नेशनल इन्वेन्ट्री रजिस्टर प्रपत्र।
- जंघिया/फरूवाही नृत्य के विषय में नेशनल इन्वेन्ट्री रजिस्टर प्रपत्र।
- कार्य के विषय में रिर्पोट A- फोटोग्राफ्स।
  B- धोबिया एवं जांघिया नृत्य संकलित गीत।
- Utilization Certificate & Account Report

आप से सादर अनुरोध है कि अनुदान की किश्त भुगतान करने की कृपा करे।

इसी निवेदन के साथ।

सादर !

आवेदक

(राजकुमार शाह)
निदेशक, समूहन कला संस्थान
सम्पर्क सूत्र/Mob. No. 09451565397

Scheme for "Safeguarding the Intangible Cultural Heritage and Diverse Cultural Traditions of India"

Form for National Inventory Register of Intangible Cultural Heritage of India

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं के संरक्षण की योजना का प्रपत्र

1. Name of the State
प्रस्तावित योजना का कार्यक्षेत्र राज्य

उत्तर प्रदेश
(UTTAR PRADESH)

2. Name of the Element/Cultural Tradition (in English)
योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा का नाम (क्षेत्रीय, स्थानीय, हिंदी एवं अंग्रेज़ी में)

धोबिया नृत्य
(DHOBIYA DANCE)

. Name of the element in the language and script of the community Concerned, if applicable
योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा से सम्बंधित समुदाय का भाषिक क्षेत्र और भाषा, उपभाषा तथा बोली का विवरण

भाषिक क्षेत्र – पूर्वी उत्तर प्रदेश
भाषा – भोजपुरी
उपभाषा और बोली – पश्चिमी भोजपुरी
भोजपुरी की तीन उपभाषाओं में से इस नृत्य में प्रयुक्त होने वाली बोली मुख्यतया पश्चिमी भोजपुरी है। लेकिन धोबिया गायन में जिलेवार भोजपुरी के बोल–चाल में थोड़ा से भेद स्पष्ट दिखाई पड़ता है और यह भेद प्रकृतिगत कारणों से है जो पूरे भारत में पायी जाती हैं।

4. Name of the communities, groups or, if applicable, individuals concerned (Identify clearly either of these concerned with the practice of the said element/cultural tradition)
योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा से स्पष्ट रूप से सम्बंधित प्रतिनिधि ग्राम, समुदाय, समूह, परिवार एवं व्यक्ति का नाम एवं संपर्क (विवरण अलग से संलग्न करें)

प्रतिनिधि ग्राम – पूर्वी उत्तर प्रदेश के अनेक गांव
समुदाय एवं समूह – धोबी समुदाय
परिवार एवं व्यक्ति का नाम एवं संपर्क – व्यक्तियों के नाम, ग्राम एवं पता आदि विवरण अलग से संलग्न है।
संलग्नक संख्या – 5

5. Geographical location and range of the element/cultural tradition (Please write about the other states in which the said element/tradition is present.
योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्त्वों की जीवंतता का विस्तारित भौगोलिक क्षेत्र (ग्राम, प्रदेश, राज्य, देश, महादेश आदि) जिनमें उनका अस्तित्व है/पहचान है ।

उत्तर प्रदेश राज्य के पूर्वी प्रदेश के विभिन्न जनपदों के विभिन्न ग्रामों में, देश–भारत (INDIA)

6. Identification and definition of the element/cultural tradition of the India (Write "Yes" in one or more boxes to identify the domain(s) of intangible cultural heritage manifested by the element. If you tick 'others', specify the domain(s) in brackets.)
i. (✓) oral traditions and expressions, including language as a vehicle of the intangible cultural heritage
ii. (✓) performing arts
iii. (✓) social practices, rituals and festive events

iv. ( ) knowledge and practices concerning nature and the universe
v. ( ) traditional craftsmanship
vi. ( ) other(s)
योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा की पहचान एवं उसकी परिभाषा/उसका विवरण

1. ✓ मौखिक परम्पराएं एवं अभिव्यक्तियाँ (भाषा इनमें अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के एक वाहक के रूप में है)

धोबिया नृत्य की परम्परायें सभी क्षेत्रों में मौखिक ही है। धोबी समुदाय के अनपढ़ लोग ही इस परम्परा के वाहक हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी इस नृत्य को आगे ले जाते हैं। इनके नृत्य में भाषा से ज्यादा अहम नृत्य शैली है जिसमें अन्तरंग अभिव्यक्तियां प्रकट होती हैं और यही धोबिया नृत्य की प्रमुख विशेषता है। इसके गायन में परिवेश के अनुरूप कुछ शब्दों को आशु कला के जैसे भी अपना लिया जाता रहा है। भोजपूरी के साथ–साथ इसमें क्षेत्रीयता की भी पर्याप्त झलक दिखाई देती है।

2. ✓ प्रदर्शनकारी कलाएं

खांटी लोक में जन्मा धोबिया नृत्य एक प्रदर्शनकारी कला है। धोबिया नृत्य में घाघरा, पैजामा, पगड़ी आदि परिधानों का इस्तेमाल होता है। पखावज, कसावर, घण्टी तथा रणसिंहा का प्रयोग वाद्य यन्त्र के रूप में होता है। इसके अलावा जोरदार आवाज में गीत गाने वाला गायकवृन्द भी होता है और हसोड़ पात्र की भी बड़ी भूमिका होती है। इसके अलावा कुछ नर्तक होते हैं जो थाप के साथ अपने बड़े घाघरे के साथ गोल–गोल घूमकर नाचते हैं। एक व्यक्ति मृदंग बजाता है और कुछ कलाकार घण्टी, डेढ़ताल (डण्डी) एवं झाल (मजीरा) एक साथ एक लय में बजाते हैं। गायकों एवं वाद्य यन्त्रों को बजाने वाले पंक्तिबद्ध होकर कभी खड़े रहकर तो कभी घूमकर अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। नर्तक और हंसोड़ पात्र पूरे स्थान पर नृत्य करते हुए गोलाकार शिफ्ट होते रहते हैं। नर्तक के कमर में एक चौड़ी पट्टी जिसपर ढेर सारी घण्टीयां लगी होती हैं, नृत्य में नर्तक कमर को आगे पीछे लचकाकर थाप और वाद्य यन्त्रों के साथ संगत पूर्ण नृत्य प्रस्तुत करता है जो विशेष आकर्षण उत्पन्न करती हैं। कमर में बंधी घण्टियों के साथ कमर के हिचकोले वाली नृत्य मुद्रा केवल धोबिया नृत्य में ही दिखाई देती है, जो इसकी विशिष्ट पहचान है।

3. ✓ सामाजिक रीति–रिवाज़, प्रथाएँ, चलन, परम्परा, संस्कार, एवं उत्सव आदि

आम तौर पर धोबिया नृत्य, धोबी जाति के शादी विवाह एवं अन्य अवसरों पर होता है। कालान्तर में इस नृत्य में महत्वपूर्ण सामाजिक साझेदारी निभाई और अन्य बिरादरी के भी शादी विवाह एवं अन्य अवसरों पर धोबिया नृत्य को बुलाया जाने लगा, जिससे भारत की मजबूत सामाजिक संरचना के निर्माण और धोबी समुदाय को सम्मान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

4. प्रकृति एवं जीव–जगत के बारे में ज्ञान एवं परिपाटी व अनुशीलन प्रथाएं

अनपढ़ ग्रामीणों वह भी खासकर निम्न जाति समुदाय के लोगों द्वारा किया जानेवाला नृत्य इत्यादि सीधे प्रकृति से आता है। प्रकृति ही उनकी गुरू होती है। जिसके आंचल में बैठकर इन लोक कलाओं की ककहरी बनती है। प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन, वृक्ष वनस्पतियों, जीवो, पशुओं का जिक्र इनके गीतों में होता है।

5. पारंपरिक शिल्पकारिता
6. अन्यान्य

7. Provide a brief summary description of the element that can introduce it to readers who have never seen or experienced it
कृपया योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा का एक रुचिपूर्ण सारगर्भित संक्षिप्त परिचय दें।

धोबिया नृत्य भोजपुरी क्षेत्र के लोक नृत्य परम्परा में सांस्कृतिक जीवन की एक जीवन्त रस धारा है। लोक जीवन में लोकरंजन से ज्यादा ये ग्रामीणों के जीवन में उल्लास भरने का काम करते हैं। अपने नाम के अनुरूप "धोबिया नृत्य" धोबी जाति द्वारा किया जाने वाला लोक नृत्य है। इस जाति विशेष का काम कपड़ों की धुलाई करना है। यह नृत्य जाति विशेष के शुभ व मांगलिक अवसरों पर किया जाता है। इस नृत्य में लगभग 15 कलाकार, जिनमें से कुछ लोग वाद्य बजाते हैं और कुछ नृत्य करते हैं। वाद्य यन्त्रों में पखावज, कसावर, डेढ़ताल, मजीरा, रणसिंहा का प्रयोग होता है।

इस नृत्य में परम्परागत वेशभूषा कुर्ता, पैजामा, पगड़ी और नर्तक वृन्द सिर पर पगड़ी के साथ शरीर पर एक कुर्तीनुमा वस्त्र और घाघरा पहनते हैं, जिसमें कमर पर एक चौड़ी पट्टी में बहुत सारी घण्टियां लगी होती हैं, जिसे कमर को आगे–पीछे लचकदार झटके के साथ नृत्य किया जाता है।

नृत्य का आरम्भ वादकगण कतारबद्ध होकर वाद्यों से शुरू करते हैं, जिसमें रणसिंहा की आवाज सबसे तीव्र होती है। वाद्य यन्त्रों के साथ अन्य सभी नर्तक और एक हंसोड़ पात्र (विदुषक) नृत्य करने वाले स्थान के बीचो बीच आकर नृत्य करने लगते हैं। इसके साथ ही साथ एक नर्तक लिल्ली घोड़ी को तेज दौड़ाते हुए चारों तरफ चक्कर लगाता है। उसी के साथ–साथ हंसोड़ भी तेजी से दौड़ते हुए घूम–घूम कर नृत्य करता है। अन्य नर्तक जो घाघरा पहने होते हैं और कमर में घण्टी बांधे रहते हैं। गोल–गोल घूमकर वृहद आकार का घाघरे से घेरा बनाते हैं। लिल्ली घोड़ी का प्रयोग प्रारम्भ में नहीं था, क्योंकि यह नृत्य श्रम से उपजा है इसकी शुरूआत और विकास श्रम के बाद फुर्सत के समय को व्यतीत करने के लिए हुआ। अतः अन्य वाद्य एवं लिल्ली घोड़ी का समावेश बाद में ही हुआ जान पड़ता है।

नृत्य के प्रारम्भ में कुछ देर तक केवल नृत्य प्रस्तुत करते हैं जो धीरे–धीरे तीव्रता की ओर बढ़ता रहता है। उसके बाद अपने पारम्परिक गीतों को भी गाते हैं। मुख्य गायक की पंक्तियों को अन्य गायक दुहराते रहते हैं। इनके गीतों में कुछ पौराणिक उपख्यान और देवी देवताओं का स्तुति वन्दन आदि भी होता है इसके अलावा गायन में सामाजिक रीति–रिवाजों और सामाजिक कुरीतियों को भी रोचक ढ़ंग से गाया जाता है। उदाहरण के तौर पर कुछ पंक्तियां –

"उठाये भइया पूछे भउजी से, काहें कोहनाइल बाडू।
नही खइली ह भात, सूति गइली हैं रात,
भइया पूछे भउजी से काहें कोहनाइल बाडू
येतनी बतिया सुनते भइया गइलें भउजी के पास
के तिरिया तोहिं भूख लगल बा, के तोहि लगल पियास
तोहार सुन्नर मुँहवा काहें के झुरायल बाटें
भइया पूछे भउजी से काहें के कोहनाइल बाडू।"

यह समुदाय शैक्षिक दृष्टि से उन्नत नहीं रहा है। इनके गीत मौखिक परम्पराओं से ही विकसित हुए जिसमें सिर्फ मनोरंजन ही नहीं अपनी पीड़ा का भी प्रकटिकरण मिलता है और इनके पारम्परिक काम–क की झलक भी दिखती है। धोबी–धोबिन के संवाद जैसी चीजें भी इनके गीतों में मिलती हैं। जैसे–

मोटी–मोटी रोटिया पकड़हा हो बरैठिन
जाये के पड़ी धोबी घाट हो धनिया
जाये के पड़ी धोबी घाट हो ।

वर्तमान में इस जातिय समुदाय के कुछ सीमित लोग ही अपनी इस पारम्परिक विधा को आंशिक रू से अपनाये हुए हैं क्योंकि वो सामाजिक बदलाव के साथ–साथ सामंजस्य का अभाव महसूस कर रहे हैं औ उपेक्षित जीवन जी रहे हैं। अपनी पारम्परिक नृत्य के प्रति उन्हें सम्मान और रोजी–रोटी का अभाव जा पड़ता है। अतः इसे बचाने के लिए इनकी सुरक्षा और हित का माहौल पैदा करना होगा।

. Who are the bearers and practitioners of the element/Cultural Traditions? Are there any specifi roles or categories of persons with special responsibilities for the practice and transmission of it If yes, who are they and what are their responsibilities?
योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्त्वों के अधिकारी व्यक्ति और अभ्यासी कौन हैं ? व इन व्यक्तियों की कोई विशेष भूमिका है या कोई विशेष दायित्व है इस परम्परा और प्रथा के अभ्यास अगली पीढ़ी को संचरण के निमित्त ? अगर है तो वो कौन हैं और उनका दायित्व क्या है।

1. यह नृत्य धोबी समुदाय का जातिय नृत्य है। अतः इस पारम्परिक नृत्य के अधिकारी व्यक्ति और अभ्या धोबी समाज के लोग हैं।
2. इस जाति के लोग अशिक्षित थे। इस लोक नृत्य का कोई लिखित विधान नहीं है। यह पारम्परिक रूप पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानान्तरित हुआ है।
3. यह लोक नृत्य वर्तमान में समाज में आंशिक रूप से ही सुरक्षित है क्योंकि बदलते समय के हिसाब से अपने को पिछड़ा महसूस करते हैं और रोजी–रोटी के लिए अन्य पेशे की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। तरफ पारिवारिक पेशा ही समाप्त हो रहा है तो दूसरी तरफ अपने पारम्परिक नृत्य को समाज के उ वर्ग द्वारा निम्न दृष्टि से देखे जाने या आत्म सम्मान न पा पाने के कारण इससे दूर हो रहे हैं अगली पीढ़ी को पर्याप्त रूप से इसके लिए प्रमोट नहीं कर रहे हैं।
4. इनकी पारम्परिक लोक संस्कृति और नृत्य को बचाने और सुरक्षित रखने का दायित्व इनके द्वारा सम्भव हो सकेगा जब इन्हें अर्थोपार्जन और सम्मान के साथ–साथ समाज और सरकार का प संरक्षण दिया जायेगा।
(इनके लोक पारम्परिक विधा को अगली पीढ़ी में स्थानान्तरित करने का दायित्व पूरा करने के लिए समर्थन और सम्बल प्रदान करने के लिए अनेकों प्रयास जबर्दस्त ढ़ंग से लम्बे समय तक करने होंगे।

How are the knowledge and skills related to the element transmitted today?
ज्ञान और हुनर/कुशलता का वर्तमान में संचारित तत्त्वों के साथ क्या अंतर सम्बन्ध है ?

- इस सांस्कृतिक विरासत के लोग जातीय समुदाय विशेष से सम्बन्ध रखते हैं जो समाज के सर्वथा

अशिक्षित वर्ग से रहे हैं, परन्तु केवल पारम्परिक ज्ञान के सहारे इनकी विधा का हुनर और कुशलता देख कर अचम्भा होता है।

- इनकी हुनर और कुशलता के आगे 'ज्ञान' शब्द फीका पड़ जाता है। इनकी विधा के सन्दर्भ में ज्ञान इनके पारम्परिक अभ्यास का कुशल परिचायक है और इसके लिए इन्हे किसी उच्च शिक्षा को प्राप्त करने के लिए किसी कॉलेज या विश्वविद्यालय की आवश्यकता नहीं होती। ये पीढ़ी दर पीढ़ी परिवार और प्रकृति के आंगन में अपने पुरखों के और बड़ो के संरक्षण में स्वतःस्फूर्त अभ्यास से न केवल कुशल बल्कि इतने पारगंत हो जाते हैं जो किसी उच्च प्रशिक्षण वाले महाविद्यालय द्वारा प्राप्त करना मुश्किल जान पड़ता है।
- ज्ञान का सम्बन्ध शास्त्रज्ञता से है ओर हुनर तथा कुशलता का सम्बन्ध लोकज्ञता से है। शास्त्रज्ञता ने लोकज्ञता को पर्याप्त सम्मान नहीं दिया है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण आज के वर्तमान आधुनिक समाज में इन पारम्परिक कलाओं की स्थिति कैसी है, यहीं जान लेना पर्याप्त होगा। विकल्प केवल यही शेष है कि इस 'ज्ञान' को इसके पारम्परिक विद्यालय में ही समय रहते सवाँर लिया जाय और इस हुनर की निरन्तरता बनायी रखी जाए।

/hat social functions and cultural meanings do the element/cultural tradition have today for its ommunity?
ाज वर्तमान में सम्बंधित समुदाय के लिए इन तत्त्वों का सामाजिकं व सांस्कृतिक आयोजन क्या मायने रखता ?

अन्य प्रान्तों में लोक संस्कृति को समाज का पर्याप्त संरक्षण मिला, जबकि भोजपूरी क्षेत्र में गरीबी ज्यादा ी और लोग रोजी–रोटी के लिए संघर्षरत रहे और समाज का पर्याप्त समर्थन नहीं मिला। इसलिए आज र्तमान में यह समुदाय अपने इन पारम्परिक लोक तत्वों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रकाशन/आयोजन के ाए अत्यधिक दुख दर्द का सामना कर रहा है।

एक तरफ पूर्व की पीढ़ी के आंखों में अपनी लोक परम्परा को खो देने की पीड़ा स्पष्ट दिखाई दे रही । तो दूसरी तरफ पेट के लिए अगली पीढ़ो को इसे अपनाने के लिए जोर नहीं देना चाहते। पारिवारिक ा ही जब समाप्त हो रहा हो और रोजी–रोटी का संकट पैदा हो गया हो तो धन प्रधान समाज में ये म्परिक सन्दर्भों में अपने दायित्व से विमुख होने के लिए मजबूर हैं। हांलाकि बातों–बातों में यह स्वीकार ते हैं कि यदि इन्हें रोजी–रोटी की सुरक्षा, सम्मान और इनका हित सुरक्षित रहे तो ये अपनी लोक म्परिक विधाओं को संजोने और उसे आगे बढ़ाने के लिए काफी हद तक तैयार हैं।

11. Is there any part of the element that is not compatible with existing international human rights instruments or with the requirement of mutual respect among communities, groups and individuals, or with sustainable development? i.e. describe any aspect of the element/cultural tradition that may be unacceptable to Law of the country or may be in opposition to practicing community's harmony with others.
क्या योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्त्वों में ऐसा कुछ है जिसे प्रतिपादित अंतरराष्ट्रीय मानव अधिकार के मानकों के प्रतिकूल माना जा सकता है या फिर जिसे समुदाय, समूह या किसी व्यक्ति के आपसी सम्मान को ठेस पहुँचती हो या फिर वे उनके स्थाई विकास को बाधित करते हों, क्या प्रस्तावित योजना के तावत या फिर सांस्कृतिक परम्परा में ऐसा कुछ है जो देश के कानून या फिर उनसे जुड़े समुदाय के समन्वय को या दूसरों को क्षति पहुंचाती हो ? विवाद खड़ा करती हो ?

प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्वों में ऐसा कुछ भी नहीं है।

12. Your Project's contribution to ensuring visibility, awareness and encouraging dialogue related to the element/cultural tradition.
प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा की योजना क्या उससे सम्बंधित संवाद के लिए पारदर्शिता, सजगता और प्रोत्साहन को सुनिश्चित करती है

बदलते परिवेश में सामाजिक ताना–बाना इस कदर बदल गया है कि धोबिया नृत्य जैसे पारम्परि लोक नृत्यों की कद्र समाप्त हो गयी है। इससे भारत की परम्परागत लोक संस्कृति को भी क्षति पहुंची है।

धोबिया नृत्य का कोई लिखित साहित्य या पुस्तक नहीं है। यह मौखिक रूप से एक पीढ़ी से अगल पीढ़ी में जाता रहा है। इसके वाद्‌य यन्त्र, गायकी और नृत्य को देखकर ही बच्चों के मन पर इसके संस्क पड़ते जाते थे और वे सहजता से इसे आत्मसात कर लेते थे। इस जाति के पारिवारिक समारोहों में कि जाने वाला धोबिया नृत्य बदलते परिवेश में पीछे छूटा जा रहा है।

इसका मुख्य कारण है इनके पैतृक व्यवसाय का खत्म होना। आजीविका के लिए दूसरे व्यवसाय को अपनाना और शहर की ओर पलायन। दूसरी ओर मनोरंजन के आधुनिक साधनों को बढ़ना। इससे इ समुदाय के सम्मुख पेट भरने की और सम्मानजनक जीवन जीने की समस्या आ खड़ी हुई है।

धोबिया नृत्य को आज भी जो लोग कर रहे हैं वे आशंकित हैं कि वे कितने दिन तक इसे जीवित रख सकें क्योंकि इसके कलाकार गिने चुने हैं और अगली पीढ़ी अब इसे सीखना नहीं चाहती।

प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा की योजना से इन कलाकारों की आंखों में कुछ आशा उत्प होने के सम्भावना है। उन्हें भी ऐसा लगता है कि इस प्रकार की योजना से उनका कुछ संरक्षण किया ज तो उनकी यह मरती विधा बच जायेगी।

धोबिया नृत्य के पारम्परिक स्वरूप को यदि र्प्याप्त मंच दिया जाय और इसे बचाने का यथेष्ट प्रयास किया जाय। इसे प्रदर्शित और ख्याति दिलायी जाय तो यह समाज के अन्य लोगों का भी ध्यान आकृष्ट करेगी। समुदायों और राज्यों के बीच संवाद को बढ़ायेगी।

धोबिया नृत्य लोक जीवन की एक जीवन्त विधा है जो फैलेगी तो प्रकाश फैलायेगी। इसके लिए आवश्यक है कि इन परम्परागत लोक कलाकारों को हर सहायता देकर प्रोत्साहित किया जाय और उनकी विधा का संवर्धन किया जाय। उसके इतिहास को गहराई से समझा जाय और इनकी पारम्परिक कला का शोध–प्रलेखन लिपिबद्ध किया जाय।

समाज को इस बात के लिए जागरूक होना चाहिए कि अपनी लोक परम्पराओं और विधाओं को जीवित रखकर ही अपने अतीत को जीवित रख सकते हैं। इसलिए हमारे वर्तमान के निर्माण में इसकी सशक्त भूमिका है। हम जो आज हैं वह एक दिन में घटित घटना नहीं, अनवरत परिवर्तन की श्रृंखला की कड़ी भर हैं।

उपरोक्त बिन्दुओं के आधार पर यह बात स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है कि प्रस्तावित योजना सम्बन्धित परम्परा से संवाद के लिए पर्याप्त पारदर्शिता, सजगता और प्रोत्साहन को सुनिश्चित करती है।

13. Information about the safeguarding measures that may protect or promote the element/cultural tradition.
(Write "Yes" in one or more boxes to identify the safeguarding measures that have been and are currently being taken by the communities, groups or individuals concerned)
( ) transmission, particularly through formal and non-formal education
( ) identification, documentation, research
( ) preservation, protection
( ) promotion, enhancement
( ) revitalization

योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्त्वों के संरक्षण के लिए उठाए जाने वाले उपायों/क़दमों/प्रयासों के बारे जानकारी में जो उसको संरक्षित या संवर्धित कर सकते हैं।
उल्लेखित उपाय/उपायों को पहचान कर चिन्हित करें जिसे वर्तमान में सम्बंधित समुदायों, समूहों, और व्यक्तियों द्वारा अपनाया जाता है।

1. औपचारिक एवं अनौपचारिक तरीके से प्रशिक्षण (संचरण)

हां, इस पारम्परिक लोक विधा के संरक्षण/संवर्धन में शिक्षा एक महत्वपूर्ण उपकरण साबित हो सकती है और इसके लिए औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों तरीके के प्रशिक्षण लाभकारी होंगे।

2. पहचान, दस्तावेजीकरण एवं शोध

हां, इसकी व्यापक स्तर पर खोज, पहचान एवं शोधपूर्ण प्रलेखन एवं प्रकाशन से इसका पर्याप्त

प्रचार–प्रसार किया जाना चाहिए।

3. रक्षण एवं संरक्षण

हां, इसे बचाने के लिए इनके सामाजिक हितों एवं रोजी–रोटी की उपलब्धता की दिशा में कुछ समर्थन देना चाहिए, जिससे इनके पारम्परिक स्वरूप का रक्षण एवं संरक्षण सम्भव हो सके।

4. संवर्धन एवं बढ़ावा

हां, इन लोक विधाओं को अत्यधिक संवर्धन एवं बढ़ावा दिये ज़ाने के उद्देश्य से इनकी कला के विकास हेतु पर्याप्त माहौल मिल सके। ऐसी सुविधाएं, कार्यशालाएं, मंचीय प्रदर्शन और इन्हें संवारने के सभी उपायों को अपनाने की आवश्यकता है।

5. पुनरुद्धार/पुनर्जीवन

हां, इनकी अनगढ़ता को संवारने के साथ ही साथ इसे पुनर्जीवन प्रदान करने के लिए इन्हें वेशभूषा, वाद्य यन्त्र, आर्थिक सहायता, सीढ़ी दर सीढ़ी उन्नत स्थिति प्राप्त करने हेतु कार्यशालाओं का आयोजन एवं पर्याप्त सहायता, समर्थन, आर्थिक सम्बल, प्रोत्साहन और मार्गदर्शन कर इसका पुनरूद्धार किया जा सकता है।

14. Write about the measures taken at local, state and national level by the Authorities to safeguard the element/cultural tradition?
स्थानीय, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत परम्परा के तत्त्वों के संरक्षण के लिए अधिकारियों ने क्या उपाय किये उनका विवरण दें ?

स्थानीय स्तर पर प्रशासन, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर कई ऐसे विभाग एवं सरकारी संस्थायें हैं जिनके कार्य क्षेत्र में इस प्रकार के सांस्कृतिक विरासत एवं परम्परा के तत्वों के संरक्षरण का दायित्व आता है। परन्तु उनके द्वारा इस दिशा में क्या ठोस उपाय किये गये हैं। इसकी समुचित जानकारी इनके द्वारा ही उपलब्ध हो सकती है, जिसका कोई विवरण हमें प्राप्त नहीं हो सका है। यदा कदा इन इकाईयों द्वारा इस दिशा में कुछ कार्यक्रमों का आयोजन दिखाई दे जाता है, परन्तु इससे इसकी भलाई के उपाय 'ऊँट के मुँह में जीरा' के समान' ही सम्भव हो सका है। अतः इस दिशा में सभी को प्र्याप्त विचार एवं कदम उठाने की आवश्यकता है।

15. Write about the threats, if any, to the element/cultural tradition related to its practice, visibility and future longevity. Give facts and relevant reasons based on the current scenario
योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्त्वों के व्यवहार, जीवन्तता और भविष्य को क्या खतरे हैं ? वर्तमान परिदृश्य के उपलब्ध साक्ष्यों और सम्बंधित कारणों का ब्यौरा दें।

प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्त्वों के व्यवहार, जीवन्तता और भविष्य को कई प्रकार के खत दिखाई पड़ रहें हैं–

1- परम्परागत कलाकारों द्वारा आजीविका हेतु अपने पैतृक कार्यों से विलग होना, जिससे इस विधा के अस्तित्व को भी खतरा हैं।

2- अगली पीढ़ी द्वारा इन परम्पराओं को न अपनाए जाने से इन विधाओं के विलुप्त होने का खतरा हैं।
3- पारम्परिक सामाजिक बन्धनों का क्षीर्ण होना जिसमें पहले इन विधा के कलाकारों की महत्वपूर्ण सामाजिक सहभागिता हुआ करती थी ।
4- व्यवसायीकरण के दौर में मंनोरजंन के बढ़ते अन्यान्य साधनो के कारण जन समुदाय का इन विधाओं को विस्मृत और उपेक्षित किया जाना।
5- सरकार और अन्य संगठनो द्वारा इन परम्परागत कलाकारों को लाभ न पहुँचना ।
6- बदलते दौर के साथ इन विधाओं के पारम्परिक स्वरूप में तेजी से बदलाव का होना जिससे इसके मूल स्वरूप को क्षति हुई है।

उपरोक्त कारणों से इस पारम्परिक तत्वों के व्यवहार, जीवन्तता और भविष्य को खतरा है

16. Safeguarding measures proposed

(This section should identify and describe safeguarding measures to protect and promote the element/cultural tradition. Such measures should be concrete and can be implemented to formulate future cultural policy for safeguarding and promoting the element/cultural tradition in the state).

संरक्षण के क्या उपाय अपनाने के सुझाव हैं ?

(इसमें उन उपायों के पहचान कर उनकी चर्चा करें जिससे के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्त्वों के संरक्षण और संवर्धन को बढ़ावा मिल सके/ये उपाय ठोस हों जिसे भविष्य की सांस्कृतिक नीति के साथ आत्मसात किया जा सके ताकि के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्त्वों का राज्य स्तर पर संरक्षण किया जा सके।)

1- इन जातीय परम्पराओं को सुरक्षित रखने के लिए इन्हे व्यापक प्रचार प्रसार के द्वारा प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और इनके दस्तावेजीकरण के लिए खोज एवं पहचान के साथ शोधपूर्ण आलेखन और उसका प्रकाशन किया जाना चाहिए।
2- समाज में इसके व्यवहारिक स्वरूप को बचाए रखने के लिए इन दलों को वर्तमान समय अनुरूप शिक्षण–प्रशिक्षण और इनकी कला के माध्यम से आर्थिक संरक्षण प्रदान की जानी चाहिए।
3- इनका संवर्धन इस प्रकार करना होगा जिससे ये अपने को उपेक्षित न महसूस करें और इस कला को अपनायें रखने में वे आत्मसम्मान का अनुभव करें।
4- अगली पीढ़ी इस विधा को अपनाने के लिए उत्साहित हो, ऐसे कार्यक्रमों को लम्बे समय तक संचालित करना और इसमें इनकी भागीदारी को प्रोत्साहन देने के लिए सुविधाएँ प्रदान करना होगा।
5- स्थानीय/ राज्य /राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर इनके प्रदर्शनों/आयोजनों को बढ़ावा देना होगा।
6- इनके स्तर में सुधार के लिए इन्हे वेश–भूषा, वाद्य यंत्र, उन्नत स्थिति प्राप्त करने हेतु कार्यशालायें एवं इसी प्रकार की अन्य सुविधाएं प्रदान करनी होगी।

7. Community Participation (Write about the participation of communities, groups and individuals related to the element/cultural tradition in formulation of your project).

सामुदायिक सहभागिता

(प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्त्वों के संरक्षण की यौजना में समुदाय, समूह, व्यक्ति की सहभागिता के बारे में लिखें)

प्रस्तावित योजना का संरक्षण का सबसे अहम हिस्सा समुदाय/ समुह और व्यक्ति की सहभागिता पर निर्भर है।

टूटती सामाजिक कड़ियों ने इन विधाओं को भारी क्षति पहुचाई है। सामाजिक स्तर पर यदि इनके हिस्से का सम्बल और आत्मसम्मान प्राप्त होता रहे तो यह इन कलाकारों के लिए संजीवनी सिद्ध होगी।

बदले हुए सामाजिक परिवेश में पहले की तरह सामाजिक रीति–रिवाजों में इसका चलन समाप्ती के कगार पर है। अतः इस समुदाय के लोगों और इन कलाकारों/दलों को मंच देने के अवसर की वृद्धि करने पर ही इनकी सहभागिता में बढ़ोत्तरी हो सकती है।

8. Concerned community organization(s) or representative(s)

(Provide detailed contact information for each community organization or representative or other non-governmental organization that is concerned with the element such as associations, organizations, clubs, guilds, steering committees, etc.)

i. Name of the entity
ii. Name and title of the contact person
iii. Address
iv. Telephone number
v. E-mail
vi. Other relevant information.

सम्बंधित समुदाय के संघठन(नों) या प्रतिनिधि(यों) (प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्त्वों से जुड़े हर समुदायिक संगठन या प्रतिनिधि या अन्य गैर सरकारी संस्था जैसे की एसोसिएशन, आर्गेनाइजेशन, क्लब, गिल्ड, सलाहकार समिति, स्टीयरिंग समिति आदि)

1– संस्था /कम्पनी/ हस्ती का नाम

2– सम्बंधित/ अधिकारी व्यक्ति का नाम पदनाम व संपर्क

3– पता

4– फोन नंबर : मोबाइल न. :

5– ईमेल :

6– अन्य सम्बंधित जानकारी

<u>कृपया देखें संलग्नक संख्या–5</u>

स पारम्परिक कला के व्यक्ति सर्वथा अशिक्षित वर्ग से रहें हैं। अतः प्रारम्भ से ही केवल इस विधा पर केंद्रित कोई संगठन नहीं है। कुछ जगहों पर इनकी जातिगत यूनियन आदि हो सकती है जो किसी भी प्रकार से स सांस्कृतिक विरासत/ परम्परा के प्रस्तावित योजना के दृष्टिकोण से कोई कार्य नहीं करती।

से में जो कलाकार एवं दल इस विधा के प्रदर्शन में संलग्न हैं वहीं इस बिन्दू के सही प्रतिनिधि हैं जिनकी ूची एवं विवरण संलग्नक संख्या 5 पर प्रस्तुत है।

ive information of any Inventory, database or data creation centre (local/state/national) that you ay be aware or of any office, agency, organisation or body involved in the maintenance of the id inventory etc.

किसी मौजूदा इन्वेंटरी, डेटाबेस या डाटा क्रिएशन सेंटर (स्थानीय/राज्यकीय/राष्ट्रीय) की जानकारी जिसका आपको पता हो या आप किसी कार्यालय, एजेंसी, आर्गेनाईजेशन या व्यक्ति की जानकारी को इस तरह की सूची को संभल कर रखता हो उसकी जानकारी दें।

1- इस प्रकार की कोई भी जानकारी अभी तक अप्राप्य है।
2- इस योजना के तहत किये जा रहे कार्यों से इस प्रकार की सूचना संकलित होने की उम्मीद सर्वथा उपयुक्त है।
3- वर्तमान में हमारे द्वारा किये गये कार्य से जिन व्यक्तियों की जानकारी एकत्र हुई है (संलग्नक संख्या–5) उन्हे हम व्यवस्थित रखते हुए आने वाले समय में उत्तरोत्तर वृद्धि करेगें।

20. Principal published references or documentation available on the element/cultural tradition (Books, articles, audio-visual materials, names and addresses of reference libraries, museums, private endeavours of artistes/individuals for preservation of the said element, publications or websites).

प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्त्वों से संबंधित प्रमुख प्रकाशित संदर्भ सूची या दस्तावेज़ (किताब, लेख, ऑडियो–विसुअल सामग्री, लाइब्रेरी, म्यूजियम, प्राइवेट सह्रदयों संग्राहकों, कलाकारों व्यक्तियों के नाम और पते तथा वेबसाइट आदि जो सम्बंधित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्त्वों केबारे में हों।

यह विरासत सर्वथा मौखिक परम्परा के रूप में ही है, अतः कोई किताब या महत्वपूर्ण अभिलेख प्राप्त नहीं है।

कुछ लेखकों, सुह्रदय संग्राहकों में कभी–कभी इस प्रकार का कुछ कार्य किया है, जिसका वे सुरक्षित संकलन उपलब्ध कराने में असमर्थ हैं, मगर कुछ प्रयासो से आगे ऐसे लेख एवं अन्य सामाग्री उपलब्ध कराने का वादा किया है।

हस्ताक्षर :	– [signature]
नाम व पदनाम :	– राजकुमार शाह (निदेशक)
संस्थान का नाम (यदि है तो) :	– समूहन कला संस्थान
पता :	– एफ–6 के सामने, रैदोपुर कालोनी, आजमगढ़–276001
फोन न. :	– ————
मोबाइल :	– 09451565397
ईमेल :	– shikharrajshah@gmail.com
वेबसाइट :	– ————

संगीत नाटक अकादेमी Sangeet Natak Akademi
NATIONAL ACADEMY OF MUSIC, DANCE AND DRAMA

Scheme for "Safeguarding the Intangible Cultural Heritage and Diverse Cultural Traditions of India"

Form for National Inventory Register of Intangible Cultural Heritage of India

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं के संरक्षण की योजना का प्रपत्र

1. Name of the State
प्रस्तावित योजना का कार्यक्षेत्र राज्य

उत्तर प्रदेश
(UTTAR PRADESH)

2. Name of the Element/Cultural Tradition (in English)
योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा का नाम (क्षेत्रीय, स्थानीय, हिंदी एवं अंग्रेज़ी में)

जांघिया नृत्य (इसे अहिरवा और फरूवाही नृत्य भी कहा जाता है)
(JHANGHIYA or AHIRAWA or PHAROOWAHI DANCE)

3. Name of the element in the language and script of the community Concerned, if applicable
योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा से सम्बंधित समुदाय का भाषिक क्षेत्र और भाषा, उपभाषा तथा बोली का विवरण

भाषिक क्षेत्र – पूर्वी उत्तर प्रदेश
भाषा – भोजपुरी
उपभाषा और बोली – पश्चिमी भोजपुरी एवं कहीं–कहीं अवधी मिश्रित भोजपुरी

4. Name of the communities, groups or, if applicable, individuals concerned (Identify clearly either of these concerned with the practice of the said element/cultural tradition)
योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा से स्पष्ट रूप से सम्बंधित प्रतिनिधि ग्राम, समुदाय, समूह, परिवार एवं व्यक्ति का नाम एवं संपर्क (विवरण अलग से संलग्न करें)

प्रतिनिधि ग्राम – पूर्वी उत्तर प्रदेश के अनेक गांव
समुदाय एवं समूह – यादव (अहीर) समुदाय
परिवार एवं व्यक्ति का नाम एवं संपर्क – व्यक्तियों के नाम, ग्राम एवं पता आदि विवरण अलग से संलग्न है।
संलग्नक संख्या – 6

5. Geographical location and range of the element/cultural tradition (Please write about the other states in which the said element/tradition is present.
योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्त्वों की जीवंतता का विस्तारित भौगोलिक क्षेत्र (ग्राम, प्रदेश, राज्य, देश, महादेश आदि) जिनमें उनका अस्तित्व है/पहचान है ।

उत्तर प्रदेश राज्य के पूर्वी प्रदेश के विभिन्न जनपदों के विभिन्न ग्रामों में, देश–भारत (INDIA)

6. Identification and definition of the element/cultural tradition of the India (Write "Yes" in one or more boxes to identify the domain(s) of intangible cultural heritage manifested by the element. If you tick 'others', specify the domain(s) in brackets.)
   i. (✓) oral traditions and expressions, including language as a vehicle of the intangible cultural heritage
   ii. (✓) performing arts
   iii. (✓) social practices, rituals and festive events
   iv. (   ) knowledge and practices concerning nature and the universe
   v. (   ) traditional craftsmanship
   vi. (   ) other(s)

योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा की पहचान एवं उसकी परिभाषा/उसका विवरण

1. ✓ मौखिक परम्पराएं एवं अभिव्यक्तियाँ (भाषा इनमें अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के एक वाहक के रूप में है)
2. ✓ प्रदर्शनकारी कलाएं
3. ✓ सामाजिक रीति–रिवाज़, प्रथाएँ, चलन, परम्परा, संस्कार, एवं उत्सव आदि
4. प्रकृति एवं जीव–जगत के बारे में ज्ञान एवं परिपाटी व अनुशीलन प्रथाएं
5. पारंपरिक शिल्पकारिता
6. अन्यान्य

जांघिया नृत्य यादव समुदाय का जातिय नृत्य है। इसका कोई लिखित साक्ष्य या शास्त्र उपलब्ध नहीं है, बल्कि यह मौखिक परम्पराओं, लोक श्रुतियों एवं अभिव्यक्तियों के माध्यम से इस समुदाय में विद्यमान है। यह एक प्रदर्शनकारी कला है, जो इस समुदाय द्वारा खुशी के अवसरों के साथ–साथ सामाजिक रीति–रिवाजों एवं उत्सवों में भी चलन में रहा है।

7. Provide a brief summary description of the element that can introduce it to readers who have never seen or experienced it
कृपया योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा का एक रुचिपूर्ण सारगर्भित संक्षिप्त परिचय दें।

जांघिया अथवा जांगिया नृत्य विशेषतः यादव (अहिर) समुदाय का जातिय नृत्य है, इसी कारण इसे अहिरवा नृत्य भी कहते हैं। कुछ क्षेत्रों में इसे फरूवाही नृत्य भी कहा जाता है, क्योंकि इसे फार के साथ गाया बजाया जाता है। इसके अलावा नर्तक के कूद कर नाचने और तरह-तरह के करतब दिखाने को इस नृत्य में शामिल करने के कारण, जिसे स्थानीय भाषा में फर्री कहा जाता है, इसे फरूवाही नृत्य कहा जाता है। अहीर जाति के नाम पर इसे अहिरवा और नृत्य की वेशभूषा में एक विशेष प्रकार का जांघिया, जिसपर घुंघरू टंके होते हैं, के कारण इसका नाम जांघिया नाम प्रचलित हुआ है।

यह नृत्य भोजपुरी भाषी इलाकों, पूर्वी उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों के यादव समुदाय में पाया जात है। इस क्षेत्र के अहीर लोग खुशी के मौके पर यह नृत्य करते हैं। इस समुदाय के लोगों में मान्यता है वि यह भगवान श्रीकृष्ण का नृत्य है। इसकी शुरूआत द्वापर युग में भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा हुई है। भगवान श्रीकृष्ण जब ग्वाल सखाओं के संग गाय चराते थे तो उस समय को व्यतीत करने के लिए और कंस क सेना के समानान्तर अपने समुदाय के लोगों को सशक्त बनाने या शारीरिक सौष्ठव प्राप्त करने हेतु इस नृत शैली का विकास हुआ।

विद्वानों का मत है कि प्रारम्भ में यह सांकेतिक (मौन) नृत्य था। इसमें वाद्यों या ध्वनियों का अभा था। यह नृत्य मौन रूप में इसलिए किया जाता था कि कंस की सेना/जासूसों को इनकी गतिविधियों व बारे में पता न चल सके। कालान्तर में धीरे-धीरे इसमें मंजीरा, नगाड़ा, घुंघरू, बांसुरी एवं अन्य वाद्य यं शामिल हुए, लेकिन श्रृंगार का पुट इसमें प्रारम्भ से ही माना जाता है। गीतों का प्रयोग इसमें बहुत बाद जुड़ा होगा। अभी भी इस नृत्य का प्रस्तुतिकरण केवल संगीत के साथ भी होता है। अतः इसे देखकर स्पष्ट हो जाता है कि इस नृत्य के साथ गीत प्रस्तुत नहीं किये जाते रहे होंगे। बाद में इसके प्रस्तुतिकरण विभिन्न गीतों का समावेश कर लिया गया। विद्वानों का मत है कि इस प्रकार का बदलाव 12वीं सदी आस-पास हुआ, जब कला संस्कृति और भाषा में लोगों ने बहुत से बदलाव कर लिये थे। इससे इस पारम्परिक स्वरूप में विभिन्नता उत्पन्न हुई। कुछ दल इसके प्रस्तुतिकरण में कुछ प्रयोग भी शामिल कर लगे हैं, इसे मिलावट मानकर विशेषज्ञों ने इसे अनुचित ठहराया है क्योंकि इससे इसके पारम्परिक स्वरूप बिगड़ने या नष्ट होने का खतरा है।

भौगोलिक भिन्नता अथवा क्षेत्रीयता के आधार पर अलग-अलग स्थानों पर इसमें थोड़ी भिन्नता भी दिखाई देती है। साथ ही इनके गीत-संगीत में क्षेत्रीयता और भाषा (स्थानीय बोली) का फर्क भी दिखता है स्थानीयता का यही पुट नृत्य के मूवमेन्ट और वेशभूषा में भी देखने को मिलती है। वेशभूषा में कहीं घुंघ युक्त जांघिया का प्रयोग मिलता है तो कहीं नहीं मिलता। कहीं कलाकार केवल धोती गंजी पर नृत्य करते तो कहीं राधा कृष्ण के प्रसंग या लीला के अभिनय को नृत्य में शामिल करते हैं। कहीं पूरी तरह से कृष्ण व तरह वस्त्र (कछनी, अंगरखा, मुरली, जांघिया) धारण करते हैं। इन सभी में घुंघरू टंके हुए जांघिया और

शारीरिक सौष्ठव (मार्शल आर्ट) वाले मूवमेन्ट अधिकांशतः पाये गये हैं। इस प्रकार से इसकी वेशभूषा में धोती गंजी के ऊपर घुंघरू टंके हुए चुस्त जांघिया जो विभिन्न रंगों से सजा होता है तथा शरीर पर अंगरखा या दुपट्टा होता है। साथ ही कुछ कलाकार इस नृत्य को प्रस्तुत करते समय साथ–साथ बांसुरी भी बजाते हैं।

नृत्य की शुरूआत खुले मैदान में खड़े वादकों द्वारा वाद्य यंत्रों के वादन से होती है। नृत्य के लिए लगभग 6 डिसिमल मैदान की आवश्यकता होती है। जिससे नर्तक को अपनी कला दिखाने के लिए भरपूर जगह मिल जाती है। वाद्य यंत्रों के लय के साथ नर्तकों का प्रवेश होता है। इसके बाद वाद्य यंत्रों और नृत्य की गति तीव्र हो जाती है। इसके बाद मुख्य गायक गायन शुरू करता है। गायन का मुख्य विषय भगवान कृष्ण के जीवन से जुड़े प्रसंगो का वर्णन है। गायन के उपरान्त नर्तक अभिनय करता हुआ नृत्य करता है।

नृत्य के दौरान नर्तक शारीरिक सौष्ठव का प्रदर्शन भी करते हैं। लाठियों के सहारे तरह–तरह के करतब नृत्य के समय किया जाता है। लाठी के उपर चढना, उसको भांजना, कांधे पर लाठी रखकर उसपर दूसरे नर्तक का चढकर बांसुरी बजाना, नृत्य करना इत्यादि भी शामिल होता है। एक प्रकार से यह शारीरिक करतब का प्रदर्शन भी है।

इस नृत्य के प्रस्तुतिकरण में लाठियों का प्रयोग करतब को शामिल करने के लिए किया जाता है। कहीं–कहीं नर्तक फूल की थाली की बारी (किनारे) पर, सिर पर घड़ा लेकर नृत्य करना और इसी प्रकार के अन्य करतबों को नृत्य में शामिल करते हैं। इसमें प्रयुक्त वाद्यों में ढ़ोलक, नगाड़ा, टिमकी, करताल अर्थात फार (बैलों के हल में लोहे का फार प्रयुक्त होता है) आदि मुख्य है।

लोक परम्पराओं के अन्य नृत्यों की तरह ही इसका मनुष्य के जीवन के साथ नजदीक का सम्बन्ध है। आज के तेजी से बदल रहे सामाजिक परिवेश में अस्तित्व के संकट से जूझते हुए ये अपनी पहचान बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील है।

3. Who are the bearers and practitioners of the element/Cultural Traditions? Are there any specific roles or categories of persons with special responsibilities for the practice and transmission of it? If yes, who are they and what are their responsibilities?
योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्त्वों के अधिकारी व्यक्ति और अभ्यासी कौन हैं ? क्या इन व्यक्तियों की कोई विशेष भूमिका है या कोई विशेष दायित्व है इस परम्परा और प्रथा के अभ्यास एवं अगली पीढ़ी को संचरण के निमित्त ? अगर है तो वो कौन हैं और उनका दायित्व क्या है।

1. यह नृत्य यादव समुदाय का जातिय नृत्य है। अतः इस पारम्परिक नृत्य के अधिकारी व्यक्ति और अभ्यासी यादव समाज के लोग हैं।
2. इस जाति के लोग अशिक्षित थे। इस लोक नृत्य का कोई लिखित विधान नहीं है। यह पारम्परिक रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानान्तरित हुआ है।
3. यह लोक नृत्य वर्तमान में समाज में आंशिक रूप से ही सुरक्षित है क्योंकि बदलते समय के हिसाब से

अपने को पिछड़ा महसूस करते हैं और रोजी–रोटी के लिए अन्य पेशे की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। एक तरफ पारिवारिक पेशा ही समाप्त हो रहा है तो दूसरी तरफ अपने पारम्परिक नृत्य को समाज के उच्च वर्ग द्वारा निम्न दृष्टि से देखे जाने या आत्म सम्मान न पा पाने के कारण इससे दूर हो रहे हैं औ अगली पीढ़ी को पर्याप्त रूप से इसके लिए प्रमोट नहीं कर रहे हैं।

4. इनकी पारम्परिक लोक संस्कृति और नृत्य को बचाने और सुरक्षित रखने का दायित्व इनके द्वारा तभ सम्भव हो सकेगा जब इन्हें अर्थोपार्जन और सम्मान के साथ–साथ समाज और सरकार का पर्याप संरक्षण दिया जायेगा।

(इनके लोक पारम्परिक विधा को अगली पीढ़ी में स्थानान्तरित करने का दायित्व पूरा करने के लिए इन समर्थन और सम्बल प्रदान करने के लिए अनेकों प्रयास जबर्दस्त ढ़ंग से लम्बे समय तक करने होंगे।)

9. How are the knowledge and skills related to the element transmitted today?
ज्ञान और हुनर/कुशलता का वर्तमान में संचारित तत्त्वों के साथ क्या अंतर सम्बन्ध है ?

- इस सांस्कृतिक विरासत के लोग जातीय समुदाय विशेष से सम्बन्ध रखते हैं जो समाज के सर्वथा अशिक्षित वर्ग से रहे हैं, परन्तु केवल पारम्परिक ज्ञान के सहारे इनकी विधा का हुनर और कुशलता देख कर अचम्भा होता है।
- इनकी हुनर और कुशलता के आगे 'ज्ञान' शब्द फीका पड़ जाता है। इनकी विधा के सन्दर्भ में ज्ञा इनके पारम्परिक अभ्यास का कुशल परिचायक है और इसके लिए इन्हे किसी उच्च शिक्षा को प्राप्त कर के लिए किसी कॉलेज या विश्वविद्यालय की आवश्यकता नहीं होती। ये पीढ़ी दर पीढ़ी परिवार औ प्रकृति के आंगन में अपने पुरखों के और बड़ो के संरक्षण में स्वतःस्फूर्त अभ्यास से न केवल कुशल बल्कि इतने पारगंत हो जाते हैं जो किसी उच्च प्रशिक्षण वाले महाविद्यालय द्वारा प्राप्त करना मुश्किल जा पड़ता है।
- ज्ञान का सम्बन्ध शास्त्रज्ञता से है ओर हुनर तथा कुशलता का सम्बन्ध लोकज्ञता से है। शास्त्रज्ञता लोकज्ञता को पर्याप्त सम्मान नहीं दिया है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण आज के वर्तमान आधुनिक समाज में इन पारम्परिक कलाओं की स्थिति कैसी है, यहीं जान लेना पर्याप्त होगा। बिकल्प केवल यह शेष है कि इस 'ज्ञान' को इसके पारम्परिक विद्यालय में ही समय रहते सवाँर लिया जाय और इस हुन की निरन्तरता बनायी रखी जाए।

0. What social functions and cultural meanings do the element/cultural tradition have today for its community?
आज वर्तमान में सम्बंधित समुदाय के लिए इन तत्त्वों का सामाजिक व सांस्कृतिक आयोजन क्या मायने रखत हैं ?

अन्य प्रान्तों में लोक संस्कृति को समाज का पर्याप्त संरक्षण मिला, जबकि भोजपुरी क्षेत्र में गरीबी ज्यादा रह और लोग रोजी–रोटी के लिए संघर्षरत रहे और समाज का पर्याप्त समर्थन नहीं मिला। इसलिए आज वर्तमान

में यह समुदाय अपने इन पारम्परिक लोक तत्वों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रकाशन/आयोजन के लिए अत्यधिक दुख दर्द का सामना कर रहा है।

एक तरफ पूर्व की पीढ़ी के आंखों में अपनी लोक परम्परा को खो देने की पीड़ा स्पष्ट दिखाई दे रही है। तो दूसरी तरफ पेट के लिए अगली पीढ़ी को इसे अपनाने के लिए जोर नहीं देना चाहते। पारिवारिक पेशा ही जब समाप्त हो रहा हो और रोजी–रोटी का संकट पैदा हो गया हो तो धन प्रधान समाज में ये पारम्परिक सन्दर्भों में अपने दायित्व से विमुख होने के लिए मजबूर हैं। हांलाकि बातों–बातों में यह स्वीकार करते हैं कि यदि इन्हें रोजी–रोटी की सुरक्षा, सम्मान और इनका हित सुरक्षित रहे तो ये अपनी लोक पारम्परिक विधाओं को संजोने और उसे आगे बढ़ाने के लिए काफी हद तक तैयार हैं।

11. Is there any part of the element that is not compatible with existing international human rights instruments or with the requirement of mutual respect among communities, groups and individuals, or with sustainable development? i.e. describe any aspect of the element/cultural tradition that may be unacceptable to Law of the country or may be in opposition to practicing community's harmony with others.
क्या योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्त्वों में ऐसा कुछ है जिसे प्रतिपादित अंतरराष्ट्रीय मानव अधिकार के मानकों के प्रतिकूल माना जा सकता है या फिर जिसे समुदाय, समूह या किसी व्यक्ति के आपसी सम्मान को ठेस पहुँचती हो या फिर वे उनके स्थाई विकास को बाधित करते हों, क्या प्रस्तावित योजना के तावत या फिर सांस्कृतिक परम्परा में ऐसा कुछ है जो देश के कानून या फिर उनसे जुड़े समुदाय के समन्वय को या दूसरों को क्षति पहुंचाती हो ? विवाद खड़ा करती हो ?

प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्वों में ऐसा कुछ भी नहीं है।

12. Your Project's contribution to ensuring visibility, awareness and encouraging dialogue related to the element/cultural tradition.
प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा की योजना क्या उससे सम्बंधित संवाद के लिए पारदर्शिता, सजगता और प्रोत्साहन को सुनिश्चित करती है

बदलते परिवेश में सामाजिक ताना–बाना इस कदर बदल गया है कि जांघिया नृत्य जैसे पारम्परिक लोक नृत्यों की कद्र समाप्त हो गयी है। इससे भारत की परम्परागत लोक संस्कृति को भी क्षति पहुंची है।

जांघिया नृत्य का कोई लिखित साहित्य या पुस्तक नहीं है। यह मौखिक रूप से एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी में जाता रहा है। इसके वाद्‌य यन्त्र, गायकी और नृत्य को देखकर ही बच्चों के मन पर इसके संस्कार पड़ते जाते थे और वे सहजता से इसे आत्मसात कर लेते थे। इस जाति के पारिवारिक समारोहों में किया जाने वाला जांघिया नृत्य बदलते परिवेश में पीछे छूटा जा रहा है।

इसका मुख्य कारण है इनके पैतृक व्यवसाय का खत्म होना। आजीविका के लिए दूसरे व्यवसाय को अपनाना और शहर की ओर पलायन। दूसरी ओर मनोरंजन के आधुनिक साधनों को बढ़ना। इससे इ समुदाय के सम्मुख पेट भरने की और सम्मानजनक जीवन जीने की समस्या आ खड़ी हुई है।

जांघिया नृत्य को आज भी जो लोग कर रहे हैं वे आशंकित हैं कि वे कितने दिन तक इसे जीवित रख सकेंगे, क्योंकि इसके कलाकार गिने चुने हैं और अगली पीढ़ी अब इसे सीखना नहीं चाहती।

प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा की योजना से इन कलाकारों की आंखों में कुछ आशा उत्प होने के सम्भावना है। उन्हें भी ऐसा लगता है कि इस प्रकार की योजना से उनका कुछ संरक्षण किया ज तो उनकी यह मरती विधा बच जायेगी।

जांघिया नृत्य के पारम्परिक स्वरूप को यदि पर्याप्त मंच दिया जाय और इसे बचाने का यथेष्ट प्रय किया जाय। इसे प्रदर्शित और ख्याति दिलायी जाय तो यह समाज के अन्य लोगों का भी ध्यान आकृ करेगी। समुदायों और राज्यों के बीच संवाद को बढ़ायेगी।

जांघिया नृत्य लोक जीवन की एक जीवन्त विधा है जो फैलेगी तो प्रकाश फैलायेगी। इसके लि आवश्यक है कि इन परम्परागत लोक कलाकारों को हर सहायता देकर प्रोत्साहित किया जाय और उन विधा का संवर्धन किया जाय। उसके इतिहास को गहराई से समझा जाय और इनकी पारम्परिक कला शोध–प्रलेखन लिपिबद्ध किया जाय।

समाज को इस बात के लिए जागरूक होना चाहिए कि अपनी लोक परम्पराओं और विधाओं को जीवि रखकर ही अपने अतीत को जीवित रख सकते हैं। इसलिए हमारे वर्तमान के निर्माण में इसकी सश भूमिका है। हम जो आज हैं वह एक दिन में घटित घटना नहीं, अनवरत परिवर्तन की श्रृंखला की कड़ी हैं।

उपरोक्त बिन्दुओं के आधार पर यह बात स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है कि प्रस्तावित योज सम्बन्धित परम्परा से संवाद के लिए पर्याप्त पारदर्शिता, सजगता और प्रोत्साहन को सुनिश्चित करती है।

13. Information about the safeguarding measures that may protect or promote the element/cultur tradition.
(Write "Yes" in one or more boxes to identify the safeguarding measures that have been and are currently being taken by the communities, groups or individuals concerned)
( ) transmission, particularly through formal and non-formal education
( ) identification, documentation, research
( ) preservation, protection
( ) promotion, enhancement
( ) revitalization

योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्त्वों के संरक्षण के लिए उठाए जाने वाले उपायों/कदमों/प्रयासों के बारे जानकारी में जो उसको संरक्षित या संवर्धित कर सकते हैं।

उल्लेखित उपाय/उपायों को पहचान कर चिन्हित करें जिसे वर्तमान में सम्बंधित समुदायों, समूहों, और व्यक्तियों द्वारा अपनाया जाता है।

1. औपचारिक एवं अनौपचारिक तरीके से प्रशिक्षण (संचरण)

हां, इस पारम्परिक लोक विधा के संरक्षण/संवर्धन में शिक्षा एक महत्वपूर्ण उपकरण साबित हो सकती है और इसके लिए औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों तरीके के प्रशिक्षण लाभकारी होंगे।

2. पहचान, दस्तावेजीकरण एवं शोध

हां, इसकी व्यापक स्तर पर खोज, पहचान एवं शोधपूर्ण प्रलेखन एवं प्रकाशन से इसका पर्याप्त प्रचार–प्रसार किया जाना चाहिए।

3. रक्षण एवं संरक्षण

हां, इसे बचाने के लिए इनके सामाजिक हितों एवं रोजी–रोटी की उपलब्धता की दिशा में कुछ समर्थन देना चाहिए, जिससे इनके पारम्परिक स्वरूप का रक्षण एवं संरक्षण सम्भव हो सके।

4. संवर्धन एवं बढ़ावा

हां, इन लोक विधाओं को अत्यधिक संवर्धन एवं बढ़ावा दिये जाने के उद्देश्य से इनकी कला के विकास हेतु पर्याप्त माहौल मिल सके। ऐसी सुविधाएं, कार्यशालाएं, मंचीय प्रदर्शन और इन्हें संवारने के सभी उपायों को अपनाने की आवश्यकता है।

5. पुनरुद्धार/पुनर्जीवन

हां, इनकी अनगढ़ता को संवारने के साथ ही साथ इसे पुनर्जीवन प्रदान करने के लिए इन्हें वेशभूषा, वाद्य यन्त्र, आर्थिक सहायता, सीढ़ी दर सीढ़ी उन्नत स्थिति प्राप्त करने हेतु कार्यशालाओं का आयोजन एवं पर्याप्त सहायता, समर्थन, आर्थिक सम्बल, प्रोत्साहन और मार्गदर्शन कर इसका पुनरूद्धार किया जा सकता है।

4. Write about the measures taken at local, state and national level by the Authorities to safeguard the element/cultural tradition?
स्थानीय, राज्य एवं राष्ट्रीय स्टार पर योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत परम्परा के तत्त्वों के संरक्षण के लिए अधिकारियों ने क्या उपाय किये उनका विवरण दें ?

स्थानीय स्तर पर प्रशासन, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर कई ऐसे विभाग एवं सरकारी संस्थायें हैं जिनके कार्य क्षेत्र में इस प्रकार के सांस्कृतिक विरासत एवं परम्परा के तत्वों के संरक्षरण का दायित्व आता है।

1- इन जातीय परम्पराओं को सुरक्षित रखने के लिए इन्हे व्यापक प्रचार प्रसार के द्वारा प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और इनके दस्तावेजीकरण के लिए खोज एवं पहचान के साथ शोधपूर्ण आलेखन और उसका प्रकाशन किया जाना चाहिए।
2- समाज में इसके व्यवहारिक स्वरूप को बचाए रखने के लिए इन दलों को वर्तमान समय अनुरूप शिक्षण–प्रशिक्षण और इनकी कला के माध्यम से आर्थिक संरक्षण प्रदान की जानी चाहिए।
3- इनका संवर्धन इस प्रकार करना होगा जिससे ये अपने को उपेक्षित न महसूस करें और इस कला को अपनायें रखने में वे आत्मसम्मान का अनुभव करें।
4- अगली पीढ़ी इस विधा को अपनाने के लिए उत्साहित हो, ऐसे कार्यक्रमों को लम्बे समय तक संचालित करना और इसमें इनकी भागीदारी को प्रोत्साहन देने के लिए सुविधाएँ प्रदान करना होगा।
5- स्थानीय/ राज्य /राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर इनके प्रदर्शनों/आयोजनों को बढ़ावा देना होगा।
6- इनके स्तर में सुधार के लिए इन्हे वेश–भूषा, वाद्य यंत्र, उन्नत स्थिति प्राप्त करने हेतु कार्यशालायें एवं इसी प्रकार की अन्य सुविधाएं प्रदान करनी होगी।

17. Community Participation
(Write about the participation of communities, groups and individuals related to t element/cultural tradition in formulation of your project).
सामुदायिक सहभागिता
(प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्त्वों के संरक्षण की योजना में समुदाय, समूह, व्यक्ति की सहभागिता के बारे में लिखें)

प्रस्तावित योजना का संरक्षण का सबसे अहम हिस्सा समुदाय/ समुह और व्यक्ति की सहभागिता पर नि है।
टूटती सामाजिक कड़ियों ने इन विधाओं को भारी क्षति पहुचाई है। सामाजिक स्तर पर यदि इनके हिस्से व सम्बल और आत्मसम्मान प्राप्त होता रहे तो यह इन कलाकारों के लिए संजीवनी सिद्ध होगी।
बदले हुए सामाजिक परिवेश में पहले की तरह सामाजिक रीति–रिवाजों में इसका चलन समाप्ती के कगार है। अतः इस समुदाय के लोगों और इन कलाकारों/दलों को मंच देने के अवसर की वृद्धि करने पर ही इनकी सहभागिता में बढ़ोत्तरी हो सकती है।

18. Concerned community organization(s) or representative(s)
(Provide detailed contact information for each community organization or representative or ot non-governmental organization that is concerned with the element such as associatio organizations, clubs, guilds, steering committees, etc.)
i. Name of the entity
ii. Name and title of the contact person
iii. Address
iv. Telephone number
v. E-mail

vi. Other relevant information.
सम्बंधित समुदाय के संघठन(नों) या प्रतिनिधि(यों) (प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्त्वों से जुड़े हर समुदायिक संगठन या प्रतिनिधि या अन्य गैर सरकारी संस्था जैसे की एसोसिएशन, आर्गेनाइजेशन, क्लब, गिल्ड, सलाहकार समिति, स्टीयरिंग समिति आदि)

1– संस्था /कम्पनी/ हस्ती का नाम

2– सम्बंधित/ अधिकारी व्यक्ति का नाम पदनाम व संपर्क

3– पता

4– फोन नंबर : मोबाइल न. :

5– ईमेल :

6– अन्य सम्बंधित जानकारी

कृपया देखें संलग्नक संख्या–6

इस पारम्परिक कला के व्यक्ति सर्वथा अशिक्षित वर्ग से रहें हैं। अतः प्रारम्भ से ही केवल इस विधा पर केंद्रित कोई संगठन नहीं है। कुछ जगहों पर इनकी जातिगत यूनियन आदि हो सकती है जो किसी भी प्रकार से इस सांस्कृतिक विरासत/ परम्परा के प्रस्तावित योजना के दृष्टिकोण से कोई कार्य नहीं करती।

ऐसे में जो कलाकार एवं दल इस विधा के प्रदर्शन में संलग्न हैं वहीं इस बिन्दू के सही प्रतिनिधि हैं जिनकी सूची एवं विवरण संलग्नक संख्या 1 पर प्रस्तुत है।

19. Give information of any Inventory, database or data creation centre (local/state/national) that you may be aware or of any office, agency, organisation or body involved in the maintenance of the said inventory etc.
किसी मौजूदा इन्वेंटरी, डेटाबेस या डाटा क्रिएशन सेंटर (स्थानीय/राज्यकीय/राष्ट्रीय) की जानकारी जिसका आपको पता हो या आप किसी कार्यालय, एजेंसी, आर्गेनाईजेशन या व्यक्ति की जानकारी को इस तरह की सूची को संभल कर रखता हो उसकी जानकारी दें।

1- इस प्रकार की कोई भी जानकारी अभी तक अप्राप्य है।
2- इस योजना के तहत किये जा रहे कार्यों से इस प्रकार की सूचना संकलित होने की उम्मीद सर्वथा उपयुक्त है।
3- वर्तमान में हमारे द्वारा किये गये कार्य से जिन व्यक्तियों की जानकारी एकत्र हुई है (संलग्नक संख्या–6) उन्हे हम व्यवस्थित रखते हुए आने वाले समय में उत्तरोत्तर वृद्धि करेगें।

20. Principal published references or documentation available on the element/cultural traditio (Books, articles, audio-visual materials, names and addresses of reference libraries, museums private endeavours of artistes/individuals for preservation of the said element, publications o

websites).
प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्त्वों से संबंधित प्रमुख प्रकाशित संदर्भ सूची या दस्त
(किताब, लेख, ऑडियो–विसुअल सामग्री, लाइब्रेरी, म्यूजियम, प्राइवेट सह्रदयों संग्राहकों, कलाकारोंध्व्यक्तिय
नाम और पते तथा वेबसाइट आदि जो सम्बंधित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्त्वों के बारे में हों।

यह विरासत सर्वथा मौखिक परम्परा के रूप में ही है, अतः कोई किताब या महत्त्वपूर्ण अभिलेख प्राप्त नह
है।
कुछ लेखकों, सुह्रदय संग्राहकों में कभी–कभी इस प्रकार का कुछ कार्य किया है, जिसका वे सुरक्षित संकलन उपलब्ध कराने में असमर्थ हैं, मगर कुछ प्रयासो से आगे ऐसे लेख एवं अन्य सामाग्री उपलब्ध कराने का वादा किया है।

हस्ताक्षर : –
नाम व पदनाम : – राजकुमार शाह (निदेशक)
संस्थान का नाम (यदि है तो) : – समूहन कला संस्थान
पता : – एफ–6 के सामने,
रैदोपुर कालोनी,
आजमगढ़–276001
फोन न. : – ————
मोबाइल : – 09451565397
ईमेल : – shikharrajshah@gmail.com
वेबसाइट : – ————

"भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्परा" के (आई0 सी0 एच0) योजनान्तर्गत संस्कृति मंत्रालय (भारत सरकार) एवं संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली के सहयोग से समूहन कला संस्थान (आज़मगढ़) द्वारा किये गये कार्य का विवरण

पारंपरिक लोक संस्कृति धोबिया नृत्य एवं जांघिया/फरूवाही नृत्य के लोक कलाकारों के लिये संचरण, निरन्तरता एवं अवसर उपलब्ध कराने का कार्य आवेदित परियोजना में मुख्य बिन्दु रखा गया है। इसके अन्तर्गत संरक्षण, सम्बल एवं बढावा देने के उद्देश्य से 5 स्थानो पर इन कलाओं के समादर और प्रदर्शन की योजना के अतिरिक्त इन विधाओ के पुरानी एवं नई पीढ़ी की संयुक्त कार्यशाला का लक्ष्य रखा गया था। कारण स्पष्ट है आज का गांव पहले जैसा नहीं है और शहरी रहन–सहन, फैशन की मानसिकता ग्राम्य जीवन पर हावी हो गई है। अपनी विरासती थाती का अवमूल्यन तेजी से हो रहा है। अपनी लोक–संस्कृति के पारंगत बहुत से कलाकार या तो इस जीवन से इहलीला समाप्त कर चुके है या काफी बूढे हो चुके है। उनकी अगली पीढी अपनी पारंपरिक लोक संस्कृति का अभ्यास करने में शर्म महसूस करती है, क्योंकि वे शहरी जीवन अपनाने की इच्छा रखते है और पारंपरिक संस्कृति के नृत्य को पिछडेपन या गवांरपन की निशानी समझते है।

इन विधाओं के कलाकार ज्यादातर अशिक्षित और अत्यधिक निर्धन है। आधुनिक बदले हुए सामाजिक ढाँचे में आजीविका के लिए अपने पैतृक कार्यो से विलग है। (पैतृक व्यवसाय समाप्ति पर हैं या समाप्त हो चुके है।) एक तरफ पारिवारिक पेशा ही समाप्त हो रहा है तो दुसरी तरफ अपने पारम्परिक नृत्य को समाज के अन्य वर्गो द्वारा निम्न दृष्टि से देखे जाने या आत्मसम्मान न पा पाने के कारण इससे दूर हो रहे है। बचे–खुचे और बुढ़े हो चुके कलाकार आशंकित है कि वे कितने दिन इसे जीवित रख सकेंगे। एक तरफ पूर्व की पीढ़ी की आंखों में अपनी लोक परम्परा को खो देने की पीड़ा स्पष्ट दिखायी दे रही है, तो दूसरी तरफ पेट के लिए अगली पीढ़ी को इसे अपनाने के लिए जोर नही देना चाहते। धन प्रधान समाज में ये पारम्परिक संदर्भो में अपनी संस्कृति से विमुख होने के लिए मजबुर है।

अतः परियोजना के पहले भाग में पुरानी एवं नई पीढ़ी के 63 वरिष्ठ कलाकारों एवं युवाओं की एक संयुक्त कार्यशाला सम्पन्न की गई, जिसमे नई पीढी को पुरानी पीढी

से इस विधा में पारंगत प्रशिक्षण और कौशल प्राप्त करने और अभ्यास करने पर ज
दिया गया। इन्हें प्रोत्साहित करने के लिये ही पुरानी एवं नई पीढ़ी के अभ्यास
संयुक्त प्रदर्शन, समादर और सम्मान लोक जनमानस के बीच अगले भाग में कि
जाना है। आवेदक संस्था चयनित विधा पर ICH के अन्तर्गत पहले से कार्य कर र
है, जिसमें Documentation आदि का कार्य हो चुका है और संचरण हेतु कार्य ज
है। अतः पिछली बार सम्पर्कित दलों से 21 से 25 अगस्त, 2015 को पाँच स्थानों
प्रदर्शन आयोजित किया गया था, तभी इन दलों के साथ एक संयुक्त वार्ता कर
लक्षित उद्देश्य के प्रति टीम में युवा सदस्यों को जोड़ने और उन्हें सीखने–सीखाने
प्रति उत्साह का आग्रह किया गया था, उसका परिणाम एक हद तक इस बार सफ
होता दिख रहा है।

कार्यशाला के 64 सदस्यों में धोबिया नृत्य के 40 और जांघिया/फरूवाही नृत्य के प्रतिभागी शामिल रहें। धोबिया नृत्य में गायन और नृत्य में वरिष्ठ कलाकारों में 46 75 वर्ष के 5 कलाकार और 30 से 40 वर्ष के 5 कलाकार , वादन में 42 से 65 वर्ष 8 कलाकार तथा युवा कलाकारों में गायन और नृत्य में 17 और वादन में 5, इ प्रकार कुल 18 वरिष्ठ कलाकार पुरानी पीढ़ी के और 22 युवा कलाकार नई पीढ़ी शामिल रहे। इसी तरह फरूवाही नृत्य में गायन और नृत्य में में 30 से 60 वर्ष के कलाकार और वादन में 36 से 60 वर्ष के 3 कलाकार ही आ सके, युवाओं में गाय और नृत्य में 12 और वादन में 2 कलाकार , कुल वरिष्ठ 10 और युवा 14 प्रतिभा उपस्थित हुए।

<u>विस्तृत विवरण संलग्नक संख्या 5 एवं 6 पर संलग्न है</u>

यह स्थिति पहले की अपेक्षा संतोषजनक कही जा सकती है, लेकिन इस दिशा में ठो काम होना अभी बाकी है, जो कई दौर में लम्बे समय तक सुखद परिणाम प्राप्त होने लिये जारी रखी जानी चाहिये। क्योंकि सामान्यतया ऐसा देखा गया है कि प्रत्येक द में कुछ उम्रदराज लोग ही विधा के विशिष्ट तत्वों में पारंगत होते है, नई पीढ़ी उस संलग्न दिखाई नही देती। जैसे प्रत्येक दल में नगाड़ा बजाने वाले पुरानी पीढ़ी के सीखने के लिये नई पीढ़ी का सदस्य शामिल नही है। विधा के नृत्य के कुछ विशे मूवमेंट/करतब के मामले में भी ऐसा ही है। कार्यशाला में इस प्रकार के कार्यो को न पीढ़ी द्वारा पुरानी पीढ़ी से सीखने और इस कार्य को प्रोत्साहित करने का प्रयास कि गया। इस हेतु से प्रत्येक टीम को युवाओं को दल में शामिल कर उन्हें सीखाने हे ध्यान देने को कहा गया है। जिससे अगले चरण में और बेहतर परिणाम प्राप्त हो परियोजना के अगले चरण में संचरण, निरन्तरता एवं अवसर उपलब्ध कराने के लिये

इन दलों का 5 स्थानो पर मंचीय प्रदर्शन एंवं सम्मान का कार्यक्रम आयोजित किया जाना शेष है , जिससे इनके आत्मसम्मान को बढावा मिले और अपनी कला को यह समाज में उपेक्षित महसूस न करें। इस विधा के कला और कलाकारों को प्रदर्शन और सम्मान के अवसर उपलब्ध कराना अति आवश्यक है। आवेदक संस्था चयनित विधा के प्रसार/पुर्नप्रतिष्ठा के उद्देश्य से अगले पॉच वर्ष तक इस कार्यक्रम को चलाना चाहती है, जिसमें इस कला के संचरण, प्रोन्नति और प्रदर्शन के द्वारा इसका प्रसार एवं इसके कलाकारों का सम्मान प्रतिस्थापित हो सके।

धोबिया नृत्य प्रस्तुत करते हुए सुनील कुमार का दल

समूहन कला संस्थान द्वारा संस्कृति मंत्रालय (भारत सरकार) एवं संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली के सहयोग/माध्यम से भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं/विधाओं पर किये गये कार्य के क्रम में संकलित

धोबिया नृत्य प्रस्तुत करते हुए सुनील कुमार का दल– रणसिंहा बजाते हुए कलाकार

समूहन कला संस्थान द्वारा संस्कृति मंत्रालय (भारत सरकार) एवं संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली के सहयोग/माध्यम से भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं/विधाओं पर किये गये कार्य के क्रम में संकलित

जांघिया/फरूवाही नृत्य का एक दृश्य (मुकेश एवं साथी)

समूहन कला संस्थान द्वारा संस्कृति मंत्रालय (भारत सरकार) एवं संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली के सहयोग/माध्यम से भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं/विधाओं पर किये गये कार्य के क्रम में संकलित

जांघिया नृत्य की एक करतबी झलकी (मुकेश एवं साथी)

समूहन कला संस्थान द्वारा संस्कृति मंत्रालय (भारत सरकार) एवं संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली के सहयोग/माध्यम से भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं/विधाओं पर किये गये कार्य के क्रम में संकलित

जांघिया / फरूवाही नृत्य की प्रस्तुति (छेदी यादव एवं साथी)

समूहन कला संस्थान द्वारा संस्कृति मंत्रालय (भारत सरकार) एवं संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली के सहयोग / माध्यम से भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं / विधाओं पर किये गये कार्य के क्रम में संकलित

जांघिया / फरूवाही नृत्य की प्रस्तुति (छेदी यादव एवं साथी)

समूहन कला संस्थान द्वारा संस्कृति मंत्रालय (भारत सरकार) एवं संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली के सहयोग / माध्यम से भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं / विधाओं पर किये गये कार्य के क्रम में संकलित

कहरउआ नृत्य प्रस्तुत करते हुए

मोहन गोंड के दल का एक नर्तक

रंगलाल गोंड के दल का लबार

समूहन कला-संस्थान द्वारा संस्कृति मंत्रालय (भारत सरकार) एवं संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली के सहयो
माध्यम से भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं/विधाओं पर किये गये कार्य के कम में संकलि

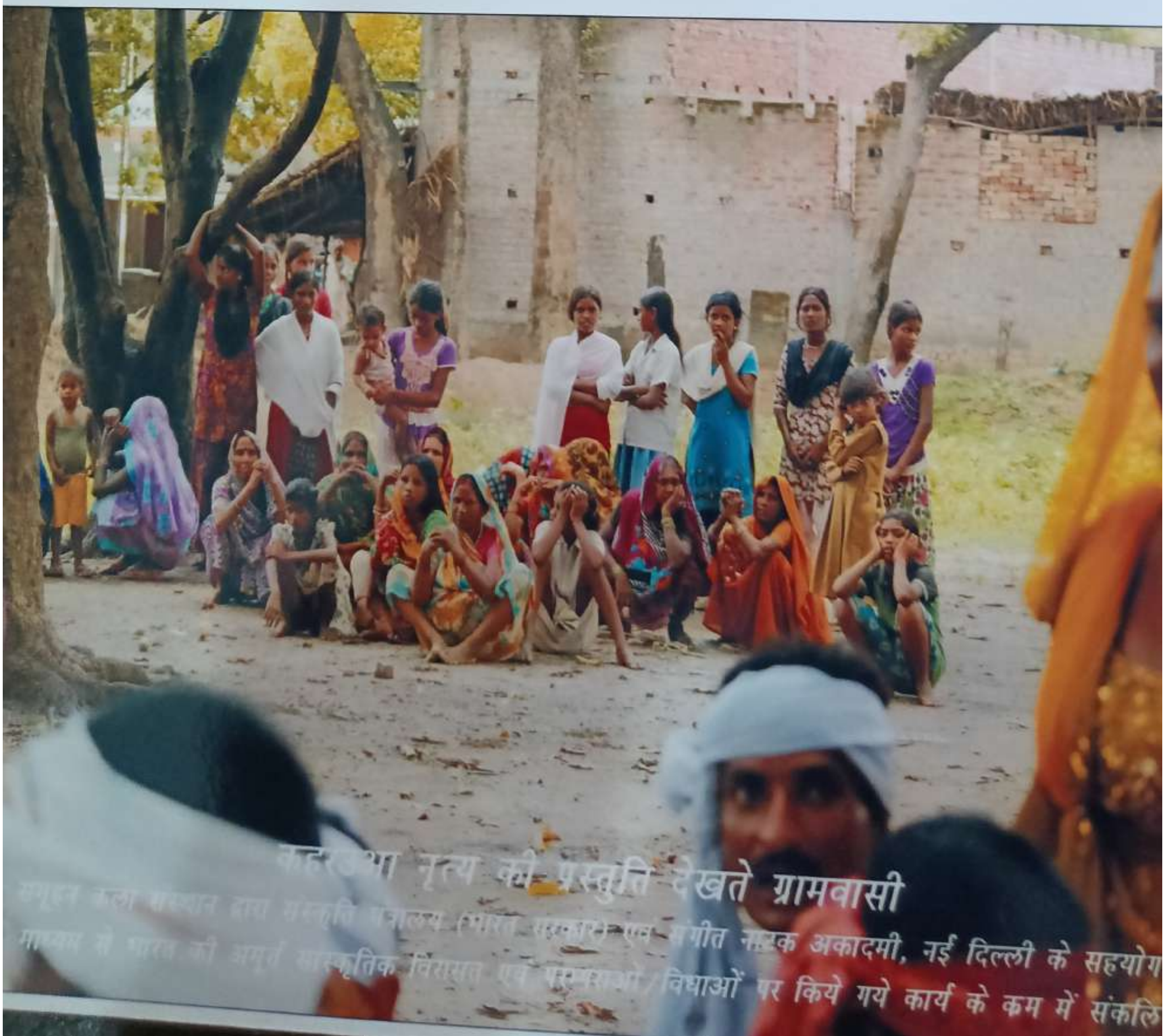

कहरउआ नृत्य की प्रस्तुति देखते ग्रामवासी

समूहन कला संस्थान द्वारा संस्कृति मंत्रालय (भारत सरकार) एवं संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली के सहयोग
माध्यम से भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं/विधाओं पर किये गये कार्य के कम में संकलि

धोबिया नृत्य प्रस्तुत करते हुए सुनील कुमार के दल का एक कलाकार

समूहन कला संस्थान द्वारा संस्कृति मंत्रालय (भारत सरकार) एवं संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली के सहयोग/माध्यम से भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं/विधाओं पर किये गये कार्य के क्रम में संकलित

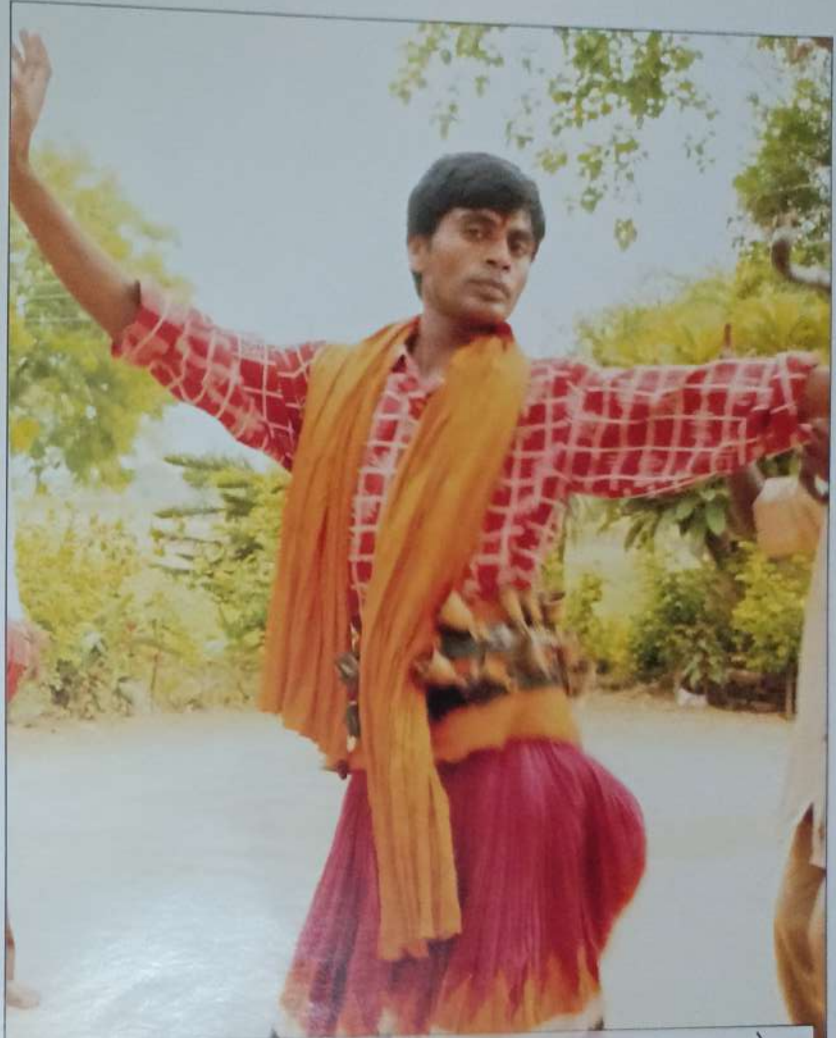

धोबिया नृत्य प्रस्तुत करते हुए छोटेलाल ग्रुप का एक कलाकार अशोक

समूहन कला संस्थान द्वारा संस्कृति मंत्रालय (भारत सरकार) एवं संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली के सहयोग/माध्यम से भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं/विधाओं पर किये गये कार्य के क्रम में संकलित

धोबिया नृत्य प्रस्तुत करते हुए जीवन राम का दल

समूहन कला संस्थान द्वारा संस्कृति मंत्रालय (भारत सरकार) एवं संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली के सहयोग/माध्यम से भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं/विधाओं पर किये गये कार्य के क्रम में संकलित

धोबिया नृत्य प्रस्तुत करते हुए जीवन राम का दल

समूहन कला संस्थान द्वारा संस्कृति मंत्रालय (भारत सरकार) एवं संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली के सहयोग/माध्यम से भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं/विधाओं पर किये गये कार्य के क्रम में संकलित

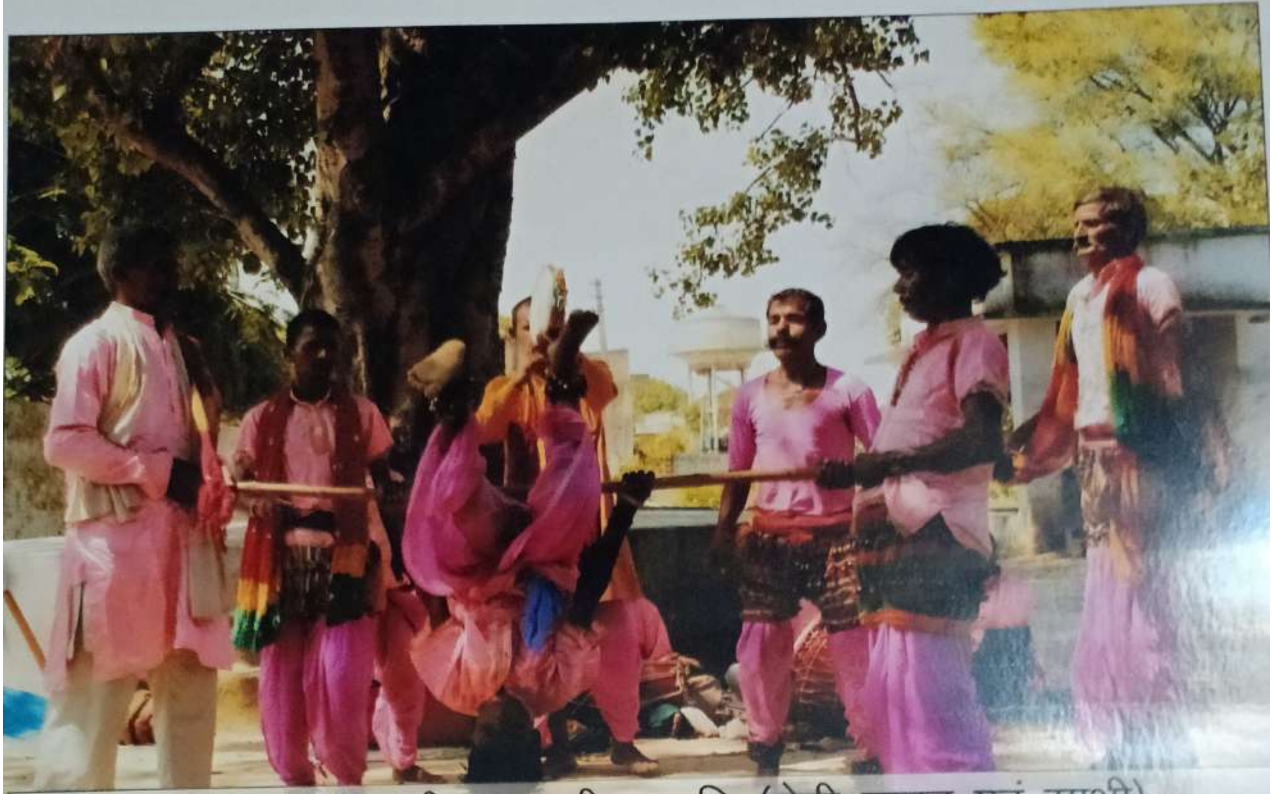

जांघिया/फरूवाही नृत्य की प्रस्तुति (छेदी यादव एवं साथी)

समूहन कला संस्थान द्वारा संस्कृति मंत्रालय (भारत सरकार) एवं संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली के सहयोग/
माध्यम से भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं/विधाओं पर किये गये कार्य के क्रम में संकलित

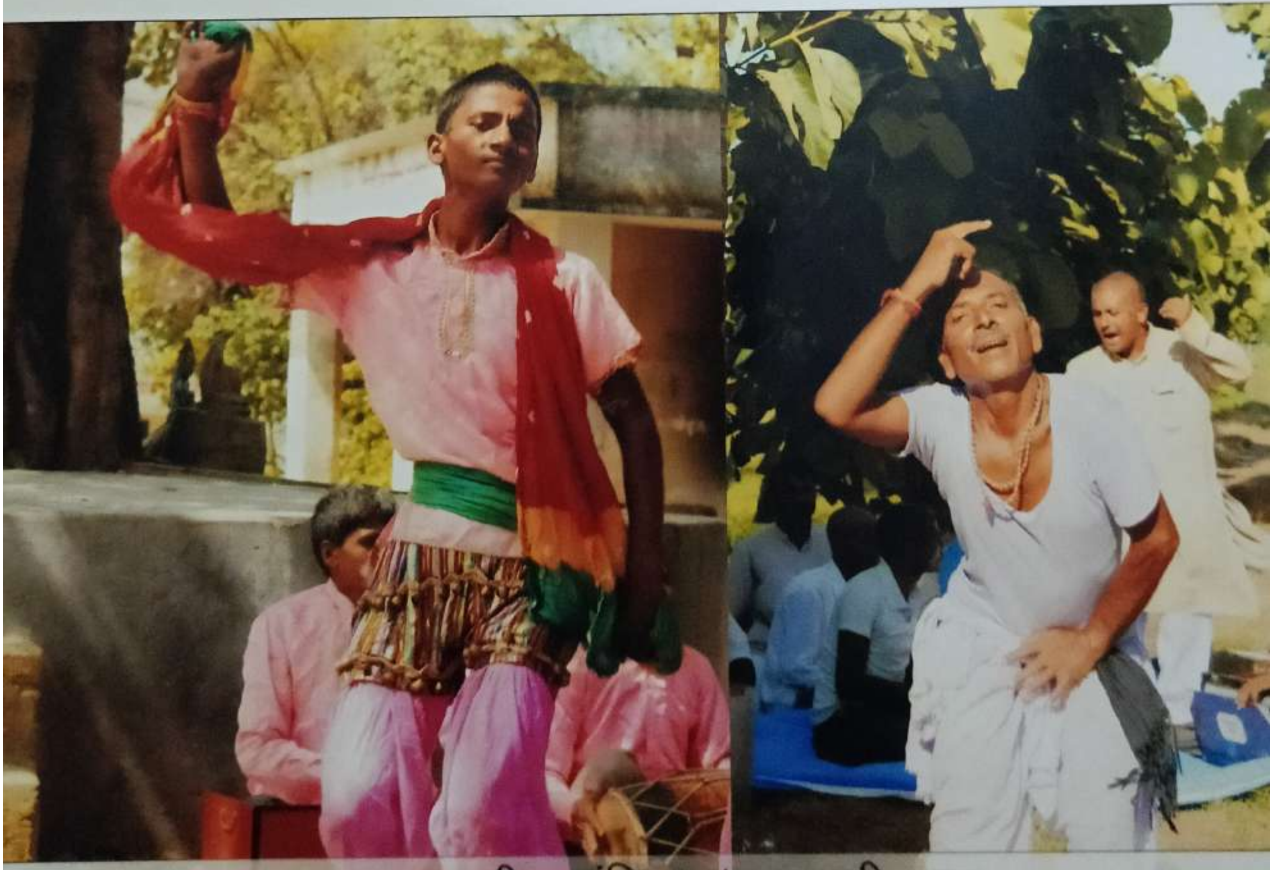

एक झलकी–जांघिया/फरूवाही नृत्य

समूहन कला संस्थान द्वारा संस्कृति मंत्रालय (भारत सरकार) एवं संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली के सहयोग
माध्यम से भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं/विधाओं पर किये गये कार्य के क्रम में संकलि

धोबिया नृत्य में गाये जाने वाले गीत

गीत – 1

तु त लेहला राजा गोरख क गुदडिया हो, उमरिया तज के बारी गइला न
तु त लेहला राजा गोरख क गुदडिया हो, उमरिया तज के बारी गइला न।।

कहती श्यामदेई व रानी, राजा हमरो चढ़ी जवानी, कइसे बितिहन जिन्दगानी
राजा राजपाठ सब लगीहन केकरे डरिया हो, उमरिया तज के बारी गइला न।।

भरथर कहै सुना ये रानी दुनिया हउवय बुल्ला पानी, छन मे मरघट घटै निशानी
रानी झूठय लागल माया क बजरिया हो, उमरिया तज के बारी गइला न।।

गंगा बगिया मे मंगइबय मंदिर सोने क बनवइबय, चन्दन क दुइया लगवइबय
झुरझुर देबै राजा अचरन क बयरिया हो, उमरिया तज के बारी गइला न।।

टिसुर कहै सुना ये बन्दा जो नर फसै नारी के फन्दा उसका यही हमेशा धन्धा
देहनी उजार जेकरे पे कइनी इ सवरिया हो, उमरिया तज के बारी गइला न।।

गीत – 2

मदन मस्त झकझोरी झंखय बिना मरद के गोरी
तजके गइला हो किशोरी कउने ओर
गइला कउनी ओर कहै देवर से गुजरिया,
चढ़तै असाड गाड गइला मोर सेजरिया
दामिन के दमक से राजा हिल जाले टंगरिया,
करइत के ठनक से राजा कापे ले शरीरिया,
बोले ला पपिहरस में भीगे ले चुनरिया
अमवा के डार बैठल बोलै कोलरिया,
तजके गइला हो किशोरी कउनी ओर

हमार नान्हें पियवा गइला परदेश हो करम लागल आग नन्दनी,
हमार नान्हें पियवा गइला परदेश हो करम लागल आग नन्दनी।।
पियु मोर गउना कराइ हमके घरवय बइठाय, अपने पूरूबय के जाई
घरवा बोलैले नन्दिया, बिरही बोली हो करजवा, लागल गोली हमके।।

सुनके ननदी कै बोली, हमारे लागल करजवय गोली
पियवा गइला कउनै ओरी,
डोली छोड़के सइया गइला मधुबनवा मांग दाग ननदी।

सुतल रहली आंगनवा, रतिया देखली सपनवा,
पियु मोर अइलय भवनवा आइके बइठै सिरहनवा,
हर मोर आलहर निदिया गइनी उचट, खाट से गइनो जाग ननदी।।

सोचौ सपनय क बात, पियु मोर कतो न देखात मल मल रही दोनो हाथ
विधना येसे अच्छा दे देता मउतिया, डशत काला नाग ननदी।।

गोरिया देने लेगै दोहाई, मुसई बार बार समझाई
उमेश कहैलय आज घर अइहन तोर सजनवा
अंगनवा बोलै काग ननदी।।

गीत – 3

लागल पइसा क बजरिया, सड़कके उपरा,
लागल पइसा क बजरिया।।

सड़क में से सडक निकाले, नदियन में से पूल
पढ़ाई, लिखाई क खुली तारिख, गांव–गांव स्कूल
खुलनी चारों ओर नहरिया, सड़क के ऊपरा।।

सड़क के ऊपर कोठी, क्वाटर खुब दुकान सजाई
पान, बीढ़ी, सिगरेट उड़ावे, पढ़वा व मिठाई
खाड़ी दौउडय ले मोटरिया, सड़क के ऊपरा।।

आगे लड़की, पिछे लड़का, लड़की को बी0ए0 कराई
पढ़, लिख के लड़का झनखय, काम कहीं न पायी
नोकरी पावें नी गुजरिया सड़क के उपरा।।

गीत – 4

रामलखन बनजाई भरत जी ननीयउरे से आई, अपने पूछे मतवा से करजोर
पूछे करजोर सुना ये मोरी मोई, कहाँ गइनै राम, कहाँ लक्षिमन भाई।।
तबले माता कैकेइ कहली समझाई, वन गइनै राम वन लक्षिमन भाई
तुरतै भरत जी लहनै धनुआ उठाई, हट जइबू पपिनिया हमे दगवै कमाई
सिरवा झुका के भरत गइनै बहिराई, अपने पूछै मतवा से करजोर

धावल धूपल चलै भरत जी दिल में शोक समाई,
सुरसा नदिया घाट के उपरा गइलै राम भेटाई, अपने पूछै मतवा से करजोर।
रोई–रोई भरत भईया करै राम से दोहइया, भइया जाला हमके जीतै विसराय
हे भइया तू हमके हो विसराई, अवधि की नगरियै मै लोटै महामाई
सिया सुन्दरी के देबा घरै पहुंचाई, भुखियों, पियास इनसे सहलो ना जाई।
फुलवा के नइया रानिया जइहै कुमिलाई, भइया जियतै जाला हो विसराय
तब राम कहै ना फिरब अवध में चाहे फिरै जवाना, धन दौलत से काम न
चलिहन लूट जाय माल खजाना, हे भइया जाला जियतै विसराय
त ना मानबै कहनवा, हमके लिखल हवै बनवा, लागत अवध के नगरियै अनि

हे रोवै ले रघुराई, हे रोवै ले रघुराई, हे वनवा जाके रोवैले रघुराई
ताल तलिया नरैया से पूछै, केहू देबा भेदवा बताई,
हे बनवा जाके रोवै ले रघुराई।।

बनवा में रौवै रघुराई हो, भइलै सीता क हरनवा,
बन क बियोगी जोगी वन बीच भटकै
बनवा में दोनो सग भाई हो, भइलै सीता क हरनवा

यही कलयुग में जाला सपराई, बाप माई भाई सब हो जाला मुदाई
उमेश कहनय समझाई हो, भइलै सीता क हरनवा।

गीत – 5

रोवै धरती मइया, फसली भौसागर में नइया,
बिना खेवइया नइया कइसे होई पार
गोरन के जंजिरिया में सकड़ल सुगनवा,
जागी जइबा देशवा के हमरे जवनवा

बिडवा उठउनय जवान खा गइनै कसमवा,
फूकै रेलगाड़ी, तोडै लाइन कनेक्शनवा
उद्यम सिंह आजाद, चन्द्रंशेखर बलवनवा,
हो गइलै शहीद पंचो देश के करनवा
नइया बिना खेवइया कइसे होई पार,

कायम अजदिया कराये मोरे भाई
झण्डा लालकिलवा पे देहलय गडवाय,
सुना सुना हो बयनवा, मोरे देश के जवनवा
भारी कय देहनै तुफनवा हिन्दुस्तनवा में

गांधी नेहरू जी महान नेता सुबाष कय देहनै ऐलान
कटिहन बेडी टुटिहन अंग्रेजी शसनवा ना
भगत जी सेम्बली में जाई देहनै बम को गिराई
झुल गइनै पंचो प्रेम क झुलनवा

गरजे खुद्दी राम बोस, कदम रखनै आपन ठोस
उड गयल अंग्रेजन क होश तउनै झनवा ना
राजगुरू जी हाथ मिलाये, शिवाजी तेगा उठाये
फेकनै कानेडीह के टेक्शी पे बमवा ना

बोलै इन्कलाब क बोली, सजली सब बिरन क टोली
खुन क होली खेलै अंग्रेजन क संगवा ना
लडते–लडते दिये भागयी, ब्रिटिश गइलै सरमाई
बाबा भीम राव अम्बेडकर, लीखे विधनवा ना

1947 में आई देशवा आजाद लिये कराई
सुनिला रहलै 15 अगस्त वाला दिनवा ना
26 जनवरी जब आई इसी को गणतन्त्र दिवस दिये मनायी
टिसुर लिखनै, उमेश गांवे राष्ट्रीय गनवा ना।

गीत – 6

कहिया ले रहबय कुवारी हों, नइहरवा में बालम
कहिया ले रहबय कुवारी हों, नइहरवा में बालम।।

केसिया बिना तेलवा, सिन्दुरवा बिना मंगईया
लौके न टिकुलिया चटकारी हो नहरवा में बालम
कहिया ले रहबय कुवारी हों, नइहरवा में बालम।।

संगवा के सखी सब गइली गवनवा, गइनी गवनवा,
हम धन जोहली दुवारी हो, नइहरवा में बालम
कहिया ले रहबय कुवारी हों, नइहरवा में बालम।।

दिलवा बिना बतिया, बलम के बिना रतिया
लौकेले सेजरिया अनिहारी हो, नइहरवा में बालम
कहिया ले रहबय कुवारी हों, नइहरवा में बालम।।

संगवा क सखी सब होरिला खेलावै,
होरिला खेलवै रामा, होरिला खेलवै
आजमगढ़ में लहरै लचारी हो, नइहरवा में बालम।।

गावै ला उमेश ललकारी हो, नइहरवा में बालम
कहिया ले रहबय कुवारी हों, नइहरवा में बालम।।

गीत – 7

आरे कोखिया बखनउ ये माता अंजनी, जेकरे दहिने हो गरजे हनुमान
तब राजा जनक की कुवारी कन्या, जनक प्रण के ठानी थी।
धनुष बाण के उपर जनक जी, सिया का व्याह रचाई जी
दूर–दूर से भूपति जुटनै, बैठै आश लगाई जी
गण लंके का राजा रावण बैठे मुसुक फुलाई जी
बड़े गर्व से चला रावण अब धनुवा लेबै उठाई जी
तनिक भी धनुषा जुमुस न खाइनै, तब गइनै सरमाई जी
तब सखियन से कहै जानकी, कौन करै मनसाई जी
जब तपसी से धनुष टुटीहन खा जहर मर जाई जी

इतनी बतिया सुनै राम जी, मन ही मन मुश्काये जी
तनी हुकुमवा दे दा गुरू जी धनुवा देबय अजमाई जी।

तब गुरू क अज्ञा पायी, धनुष हाथ में उठाई
धनुषा तीन खण्ड कयनाई हो जनकपुर में।।

धनुषा तोडै रघुराई, बाजल अंगने में बधाई
सीता हार पहिराई हो जनकपुर में ।।

बन कें दुलहिनिया सिया जी भइली थाडी
सखिया सहेली सब गावे ली लचारी
लेबा विदवा कराई, मन मोहन हो

बाकी बन के दुलहिनिया चलबय अवधंपुरा के गलियां
तोहसे लागल बा लगइनीया मन मोहन हो।

राम कहै धरा धीर गोकुला जनम लिहब फेर
मिलबै जमुना के तीर मनमोहन हो

लिहब देवकी घर जनमवा, तोडब कंसा क गुमनवा
राखब सखिया क मनवा मनमोहन

सुना–सुना हो जहनवा, हमार आजमगढ़ मकनवा
उमेश गांवे ल तरनवा, मनमोहन हो।

गीत – 8

चोर छोटी ननदी, रतिया क झुलनिया ले गयल चोर छोटी ननदी
चोर छोटी ननदी, रतिया क झुलनिया ले गयल चोर छोटी ननदी
तोहरै भेष धैके राजा चोर दुवरवै आई,
तोहरे जैइसन बोली बोलै, तोहरे यस गोहराई
पियवै जान केवडिया देहली खोल छोटी ननदी
त हमका जानी मोर बलमुआ, थकल कहीं से आये हो
यही ख्याल में हम रहली, त पिया के नाही जगाये हो
हमहु सुतली गरवै में गर जोर छोटी ननदी
बड़े देर तक देखत रहली मुह से कुछ ना बौलै हो
हमरे दिल में सोच भइल तब दियना जरा के देखौ हो

सेजिय उपरा सुतलै मुहवां फेर छोटी ननदी
तब अधिरात निर्खण्ड भइल चब चोली पर हाथ फैरे हो
चोर–चोर जब हल्ला कइली, जुटल मोहल्ला टोला हो
खिचय नथुनिया भागल केवडिया खोल छोटी ननदी
भल कइलै छुलनी ले गइलो इज्जत लियो बचायी हो
झुठ साच उ ईश्वर जानै ना जग पतियाई हो
कहे उमेशवा काहे मचउलू शोर छोटी ननदी।
हमत गाइला लचरिया आजमगढ़ से ।

गीत – 9

भइले बिहनवा बोलेले कोइलरिया उठा हो बहुवर
बहुवर अंगना बहोरा उठा हो बहुवर

कइसे क अंगनवा बहोरो ये सास जी बेटउवा राउर ना
सुते अचरा दबाई हो बेटउवा राउर ना

गुनवा के अगर जो रहतु ये बहुवर अचरवा आपन ना
लेतु सझवे बटोर हो अचरवा आपन ना

कइसे के अचरा बटोरो ये सासु जी अचरवा बिना ना
हरि के निदियो न आवे अचरवा बिना ना

गीत – 10

भईया रंगरेजवा चुनरिया छपवाई दा –2

पहिले छापो सहर बनारस गंगा के लहरिया
विश्वनाथ के मंदिर छापो विन्ध्याचल नगरिया
चुनरिया छपवाई दा भईया रंगरेजवा चुनरिया छपवाई दा

जगरनाथ के मंदिर छापो अवध नगरिया
राम लखन भरत शत्रुधन कौशिल्या महतरिया
चुनरिया छपवाई दा भईया रंगरेजवा चुनरिया छपवाई दा

एक ओर छापो लंक पति के रावण की संहरिया
एक ओर छापो हनुमत सीता के देत मुनरिया
चुनरिया छपवाई दा भईया रंगरेजवा चुनरिया छपवाई दा

जौनपुर के मंदिर छापो छापो पुल बरदरिया
अचरे पर छापो भारत माता के लहरिया
चुनरिया छपवाई दा भईया रंगरेजवा चुनरिया छपवाई दा

गीत – 11

भऊजी सगरो चुनरिया चटकार बा अचरवा काहे धुमिल हौ ना
देवरा फुलवा लोढे गईली फुलवरिया भवरवा रसवा ले गइले ना
भऊजी देइ देबु तिरिया धनुहिया भवरवा मारी आई हो ना
देवरा जब तुही मरबा भवरवा हम त कइसे जीयब हो ना
भऊजी डाली हो देबु रेशम पट झलुववा देवरवा भऊजी झुलत हो ना
देवरा अगिया लागे तोहरो झलुववा भवरवाँ नाही तेजब ना

गीत – 12

चला चली खेतवा की ओर मोर मितवा रे आवा चली खेतवा की ओर

कइली श्रृंगार आज विहसे सिवनीया
चमके बदनिया पर धानी रे ओढनिया
बुतवा के हार चारो ओर मोर मितवा रे आवा चली खेतवा की ओर

ऊख रानी ठाढे सलवरवा सवारे
हेने आवा हेने आवा सबके पुकारे
रसवा भरल पोरे पोर मोर मितवा रे आवा चली खेतवा की ओर

अनवा से भरी जइहे बखरी अगनवाँ
अब सितलहर होई जइहे सपनवा
होई जइहे दुख दुर तोर मोर मितवा रे आवा चली खेतवा की ओर

सुना ये किसान भईया खेती के बयनवा
नया ढंग से खेती करा माना मोर कहनवा
गावे जीवन लाल उठी भोरे भोर मोर मितवा रे आवा चली खेतवा की ओ

समूहन कला संस्थान

गीत – 13

जुडाला बलमा हो – 3
मोरी अचरा के छईंया जुडाला बलमा

चार महीना रहे गरमी के दिनवां
धरती आकाश जरे बहेला पवनवा
तनी अखिया से अखिया मिला ला बलमा मोरी अचरा के छईंया....

चार महीना रहे रिमझिम बदरिया
सावन महीना सखी गावेली कजरिया
गोदी में बैइठा के झूलादा बलमा मोरी अचरा के छईंया....

ठण्डा ठिठोरे जियरा हिलोरे
चन्दा चंदनिया के जइसे निहोरे
तनी गरवा में गरवा लगाल बलमा मोरी अचरा के छईंया....

अइले बसन्त ऋतु मन के लोभावे
पिऊ पिऊ पपिहरा जब रटन लगावे
धानी रंग चुनरी रंगादा बलमा मोरी अचरा के छईंया....

गीत – 14

गोदाइब सखिया हो – 2
हम आजादी कै गोदनवा गोदाइब सखिया

गोदनवा पर गाँधी बाबा राष्ट्रपिता शुभ नमवा
लिलरा पर लक्ष्मीबाई जीन लड़ गये ब्रिटिश संगवा
दुश्मन भागेले परनवा गोदाइब सखिया
हम आजादी कै गोदनवा गोदाइब सखिया

पट्टा ऊपर पटेल वीर सुबाष चन्द मस्तनवा
भुजा ऊपर भगत सिंह आजादी कै दिवनवा
झूल गये फाँसी पर झूलनवा गोदाइब सखिया
हम आजादी कै गोदनवा गोदाइब सखिया

गीत – 15

होत भीनसहरे बेटी अंगना बहोरिहा
सुता जनी दिनवा उगानी हो सीता राम से बनी

सास ससुर जी क कहना तु मनिहा बेटी
अउरी तु जेठ जेठानी हो सीता राम से बनी

सईयां क नित उठी चरन नवईहा बेटी
झगरा जनी करिहा भुलानी हो सीता राम से बनी

देवरा से मीठी मीठी बोली बोलीहा बेटी
मत करिहा तनीको नादानी हो सीता राम से बनी

येतना बचन बेटी मानी तु जइबु बेटी
तब होबु तु पटरानी हो सीता राम से बनी

कहे जीवन लाल आपन चाल सुधारा
अइसन ना मिलिहे परानी हो सीता राम से बनी

जांघिया/ फरूवाही नृत्य में गाये जाने वाले गीत

गीत – 1

राम नाम नदिया अगम बही जाय

ओहमा केहु–केहु नहाय

ब्रम्हा नहाने विष्णु नहाने

अरे शंकर नहाय आपन डमरू बजाय –

ओहमा केहु–केहु नहाय

राम नहाने लक्ष्मण नहाने

अरे सीता नहाय आपन अचरा बहाय –

ओहमा केहु–केहु नहाय

राधा नहानी रूकमणि नहानी

कन्हा नहाय आपन बन्सी बजाय –

ओहमा केहु–केहु नहाय

सूर नहाने कबीर नहाने

तुलसी नहाय आपन माला डोलाय –

ओहमा केहु–केहु नहाय

गीत – 2

माया गई हैं लोभाय–2

न जाने कौन रंग फुलवा हो–2

काव मैइया ओढ़ै काव बिछावै,

काव करैं फरहार–2 केथुवा की डरिया मइया

फुलवै ओढ़ै मइया, फुलवै बिछावै

जैफर करैं फरहार–2

लौंगा की डरिया मैइया औढ़हौं हो–2

कवन फूल–फूलै मैइया संझवा सबेरवा

कवन फूलै आधी रात–2

ना जानी कवन रंग पुलवा हो

बेला और चमेली फूलै, संझवा सबेरवा–2

गूलर फूलै आधी रात–2

अढ़उल कै लाल रंग फुलवा हो

गीत – 3

कहंवा से आवै हमरी काली मइेया औरव सितल रनिया हो

रामा कहंवा से आवै भगवान, अजोधिया मा राज करै हो

पुरवा से आवैं हमरी काली मैइया औरव सितल रनिया हो

रामा दखिना से आवै भगवान अजोधिया में राज करै हो।।

कहंवा बैठाइ हमरी काली मैइया औरव सितल रनिया हो

रामा कहवां बैठाई भगवान अजोधिया में राज करै हो

निबिया पै बैठी हमरी काली मैइया औरव सितल रनिया हो

रामा पिपरे पै बैठे भगवान, अजोधिया में राज करै हो।।

काव चढ़ाई अपनी काली मैइया औरव सितल रनिया हो

रामा काव चढ़ाई भगवान, अजोधिया में राज करै हो

धरिया लवंगिया अपनी काली मैइया औरव सितल रनिया हो

रामा दुधवा चढ़ाई भगवान, अजोधिया में राज करै हो।।

कला संस्थान

गीत – 4

झलुवा पड़ा सलोना दशरथ के महल मा झुलनवा झूले चारो भइया

राम लखन औ भरत शत्रुधन झूलै बारी–बारी से

ब्रम्हा विष्णु भोला देखें लीला गनन किवारी से

अरे मगन भयै त्रिपुरारि

दुनिया मगन भई बा राम के भजन मा –झुलनवा

रिमझिम–2 मेघा बरसे पवन चलै पुरवाई जी–2

ऋषि मुनि नर नारि झूमके सावन कजरी गाई जी

अरे रूप देख सबही लोभाय

जिन्दगी सफल भई प्रभु पाय के दर्शनवा –झुलनवा

घर–घर झलुवा पड़ा सलोना झूले सिया सजनवा जी

आदर्श राम कै घर–घर फैलै यही अहय अरमनवा जी

अरे तबै होई भइया राम राज

घर–घर जनम लेवैं दशरथ के ललनवा –झुलनवा

गीत – 5

जौनेदिना राम कै जनम भये

अरे सोनवा सहत भये–2

हे मोरे रामा सोनवा मा सुन्दर बा मुकुटवा

कि राम जी माथे सोहै हो–2

अरे बरतन सहत भये–2

हे मोरे रामा बरतन मा सुन्दर है कटोरवा

हो कि रामा मोरे दूध पियय हो

अरे कपड़ा सहत भये–2

हे मोरे रामा कपड़ा मा सुन्दर है लंगोटिया

कि राम जीं के अंगे सोहै हो

अरे लकड़ीं सहत भये–2

हे मोरे रामा लकड़ीं में सुन्दर है खड़ाऊवा

कि राम जीं के पाव सोहै हो

अरे घोड़वा सहत भये–2

हे मोरे रामा घोड़वा पे सुन्दर है लगमवा

राम मोरे घूमन चलै हो

गीत – 6

कोरी कोरी नदीया राधे दहीया रे जमवली

इमीरीती डार अरे जोरनवा इमीरीती डार

अपने त दुहे सासु गईया से भईसीया

हमरा के लगावे अहीरे दहीया चोरिया

हमरा के लगावे....

अपने त बेचे सासु ओइणा से गोइणा

हमरा के पठावे अहीरे जमुना परवा

हमरा के पठावे.........

गीत – 7

कवन रंग मुगवा कवन रंग मोतिया

कवन हो रंगवा ना ननदी रे तोर भईया कवन हो रगंवा ना

जवन रंग मुगवां जवन रंग मोतिया

ओही रे रंगवा ना भौजी रे मारे भईया ओही रे रंगवा ना

गीत – 8

अपने त गइल सईया पुर्वी रे वनीजीया से

भेजल नाही ना ए को पतीया संदेसवा भेजल नाही ना

केकरा से कही हम दिलवा के बतीया

कटेले नाही ना हमरे वजरे के रतिया कटेले नाही ना

<u>गीत – 9</u>

पिया बस गईल जा के परदेस में रहेली कलेस्स में ना

बरसे सावन के फुहार ,पपीहा पी पी करे पुकार

रुप भईल जोगीनीया के भेस में,

रहेली कलेस्स मे ना

<u>गीत – 10</u>

होली खेले रघुवीरा अवध मे,

होली खेले रघुवीरा.......................

केकरे हाथ कनक पिचकारी,

केकरे खोईछा अबीरा अवध में.........

राम के हाथ कनक पिचकारी,

सीया क खोईछा अबीरा अवध में,

होली खेले रघुवीरा

SANJAY & SUNIL
Chartered Accountants

510 "SAGAR", RAHUL NAGAR (MADYA), AZAMGARH 276 001
Phones: +91 5462 247009 & 246387 (Fax) 9415207855 (M)
e-mail : sanjay_sunil@hotmail.com, casanjay.sunil@gmail.com

FORMS GFR 19-A
[See Rule 212(1)]
Form of Utilisation Certificate

Sl. No.	Lette No. & Date	Amount	
1	28-6/ICH Scheme/108/2015-16 dt. 29.01.2016 1st Installment	3,50,000.00	Certified that out of Rs.6,98,950.00 (Rs. Six Lakhs Ninety Eight Thousand Nine Hundred Fifty only) of grant-in aid sanctioned during the year 2015-16 in favour of Samoohan Kala Sansthan, In Front of F-6, Raidopur Colony, Azamgarh as ICH Grant under Sangeet Natak Academy's letter no. and date given in the margin and Rs..Nil. on account of unspent balance of the previous year, a sum of Rs.6,98,950/- (Rupees Six Lakhs Ninety Eight Thousand Nine Hundred Fifty only) has been utilised for the purpose of conducting of Paramparik Lok Sanskriti Dhobiya & Janghiya Workshop for which it was sanctioned and that the balance of Rs... Nil. remaining unutilised at the end of the year has been surrendered to Government (vide No... NIL. dated NIL) will be adjusted towards the grant-in-aid payable during the next year NIL.
2	28-6/ICH Scheme/108/2015-16 dt. 29.01.2016 2nd Installment	1,75,000.00	
3	Grant Receivable	1,73,950.00	
	TOTAL	6,98,950.00	

2. Certified that I have satisfied myself that the conditions of which the grant-in-aid was sanctioned have been duly fulfilled/are being fulfilled and that I have exercised the following checks to see that the money was actually utilised for the purpose for which it was sanctioned.

Kind of checks exercised.

1. Receipt and Payment statement.
2. Income and Expenditure statement.
3. Bank statement.
4. Cash Book and vouchers.
5. Other Relevant documents.

For & on behalf of
SAMOOHAN KALA SANSTHAN

(RAJ KUMAR SHAH)
Director

For & on behalf of
SANJAY & SUNIL
Chartered Accouctants
FRN.: 0513021C

SANJAY & SUNIL AZAMGARH CHARTERED ACCOUNTANTS

(CA S.K. GUPTA)
Proprietor
Membership No.: 075833

Azamgarh, Dated: 12.09.2018

संगीत नाटक अकादेमी
Sangeet Natak Akademi
NATIONAL ACADEMY OF MUSIC, DANCE AND DRAMA, INDIA
RABINDRA BHAVAN, FEROZE SHAH ROAD, NEW DELHI-110 001
Tel. 23387246, 23387247, 23387248, 23382495
FAX: 91-11-23382659, 91-11-23385715 GRAM: NATAKADEMI
E-mail: sangeetnatak@bol.net.in
Website: http://www.sangeetnatak.org

अनुदान उपयोग प्रमाणपत्र
GRANT UTILIZATION CERTIFICATE

प्रमाणित किया जाता है कि संगीत नाटक अकादेमी द्वारा अपने तारीख..........
Certified that the sum of Rs. 6,88950-00 .... (Rupees .... only)
sanctioned by Sangeet Natak Akademi, New Delhi, in its letter No. 28-6/ICH Scheme/1081/2015-16
के पत्र संख्या.......... में.......... प्रयोजन
dated 29.01.2016 as an ad-hoc grant-in-aid for the year 2015-16
के लिए वर्ष.......... के लिए तदर्थ सहायता अनुदान के रूप में स्वीकृत..........
for..........
.... रुपए.......... रुपए मात्र)
has been utilized for the purpose mentioned above.
की राशि का प्रयोग उपर्युक्त प्रयोजन के लिए किया गया है।

इस राशि के व्यय का विवरण संलग्न है।
A statement of expenditure for the amount is enclosed.

तारीख
Date 12.09.2018

संस्था की मोहर
Seal of the Institution

चार्टर्ड लेखाकार द्वारा प्रतिहस्ताक्षरित
COUNTERSIGNED BY CHARTERED ACCOUNTANT

हस्ताक्षर
Signature

नाम
Name Rajkumar Shah

पदनाम
Designation Director

संस्था का नाम एवं पता..........
Name and Address of the Institution Samsodhan Kala Sansthan
Opposite To F 6, Raidaspur Colony
Azamgarh - 276001 (U.P.)

SAMOOHAN KALA SANSTHAN
IN FRONT OF F-6, RAIDOPUR COLONY,
AZAMGARH-276001 (UP)

BALANCE SHEET OF THE PROGRAMME 'PARAMPARIK LOK SANSKRITI DHOBIYA & JANGHIYA WORKSHOP' AS ON 22ND AUGUST, 2018.

CAPITAL & LIABILITIES	AMOUNT	ASSETS	AMOUN
UNSECURED LOANS		CURRENT ASSETS	
From Friends	1,73,950.00	Grant receivable from Ministry of Culture, Govt. of India via Sangeet Natak Academy, New Delhi vide ref. no. 28-6/ICH-Scheme/108/2015-16 dt. 29-01-2016 3rd Installment	1,73,950.0
TOTAL	1,73,950.00	TOTAL	1,73,950.

Per our report attached.

For & on behalf of
SANJAY & SUNIL
Chartered Accountants

SANJAY & SUNIL
AZAMGARH
CHARTERED ACCOUNTANTS

(CA S.K. GUPTA)
Proprietor

Azamgarh, Dated: 12.09.2018

For & on behalf
SAMOOHAN KALA SANSTHA

(RAJKUMAR SHA
Direc

SAMOOHAN KALA SANSTHAN
IN FRONT OF F-6, RAIDOPUR COLONY,
AZAMGARH-276001 (UP)

INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT FOR PERIOD ENDED 22ND AUGUST 2018.

PARTICULARS	AMOUNT	AMOUNT
By Workshop and Research Program Expenses:		
Remuneration to Participants		
38 member x 4,000.00	1,52,000.00	
22 member x 3,000.00	66,000.00	
4 member x 6,000.00	24,000.00	
Fooding & Lodging	96,000.00	
Tea, Stationery & Miscellaneous Expenses	12,600.00	3,50,600.00
* Expenses on Working Team:		
(a) Remuneration to Documentation Staff and Co-ordinator Team including fooding	1,49,700.00	
(b) Audio Recoring Unit	18,000.00	
(c) Transportation/Vehicle Rent	41,500.00	2,09,200.00
* Workshop & Discussion meeting of Lecturers from different field (3 days), Honorarium, fooding and TA		1,18,400.00
* Tea, Management team Remuneration and		20,750.00
TOTAL		6,98,950.00

PARTICULARS	AMOUNT	AMOUN
By Grant from Ministry of Culture, Govt. of India via Sangeet Natak Academy, New Delhi vide ref. no. 28-6/ICH-Scheme/108/2015-16 dt. 29-01-2016 1st Installment		3,50,000.0
* Grant from Ministry of Culture, Govt. of India via Sangeet Natak Academy, New Delhi vide ref. no. 28-6/ICH-Scheme/108/2015-16 dt. 29-01-2016 2nd Installment		1,75,000.
* Grant receivable from Ministry of Culture, Govt. of India via Sangeet Natak Academy, New Delhi vide ref. no. 28-6/ICH-Scheme/108/2015-16 dt. 29-01-2016 2nd Installment		1,73,950.
TOTAL		6,98,950

Per our report attached.

For & on behalf of
SANJAY & SUNIL
Chartered Accountants

SANJAY & SUNIL
AZAMGARH
CHARTERED ACCOUNTANTS

(CA S.K. GUPTA)
Proprietor

Azamgarh, Dated: 12.09.2018

For & on beha
SAMOOHAN KALA SANST

(RAJKUMAR S
Dir

SAMOOHAN KALA SANSTHAN
IN FRONT OF F-6, RAIDOPUR COLONY,
AZAMGARH-276001 (UP)

RECEIPTS & PAYMENTS ACCOUNT FOR THE PERIOD ENDED 22ND AUGUST, 2018.

RECEIPTS	AMOUNT	PAYMENTS	AMOUNT	AMOUNT
To Grant from Ministry of Culture, Govt. of India via Sangeet Natak Academy, New Delhi vide ref. no. 28-6/ICH-Scheme/108/2015-16 dt. 29-01-2016 1st Installment	3,50,000.00	By Workshop and Research Program Expenses:		
		Remuneration to Participants		
		38 member x 4,000.00	1,52,000.00	
		22 member x 3,000.00	66,000.00	
		4 member x 6,000.00	24,000.00	
		Fooding & Lodging	96,000.00	
		Tea, Stationery & Miscellaneous Expenses	12,600.00	3,50,600.00
" Grant from Ministry of Culture, Govt. of India via Sangeet Natak Academy, New Delhi vide ref. no. 28-6/ICH-Scheme/108/2015-16 dt. 29-01-2016 2nd Installment	1,75,000.00	" Expenses on Working Team:		
		(a) Remuneration to Documentation Staff and Co-ordinator Team including fooding	1,49,700.00	
" Unsecured Loans	1,73,950.00	(b) Audio Recoring Unit	18,000.00	
		(c) Transportation/Vehicle Rent	41,500.00	2,09,200.00
		" Workshop & Discussion meeting of Lecturers from different field (3 days), Honorarium, fooding and TA		1,18,400.00
		" Tea, Management team Remuneration and Miscellaneous Expenses		20,750.00
TOTAL	6,98,950.00	TOTAL		6,98,950.00

Per our report attached.

For & on behalf of
SANJAY & SUNIL
Chartered Accountants

SANJAY & SUNIL AZAMGARH CHARTERED ACCOUNTANTS

(CA S.K. GUPTA)
Proprietor

Azamgarh, Dated: 12.09.2018

For & on behalf of
SAMOOHAN KALA SANSTHAN

(RAJKUMAR SHAH)
Director